श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय

(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)

बी–4, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली–110016

क्रमांक एफ–03/ला.ब.शा.रा.सं.वि./2021–22 **दिनांक 15.07.2021**

प्रवेश–सूचना–2/2021–22

शैक्षणिक सत्र 2021–22 में विश्वविद्यालय द्वारा संचालित **एम.ए. हिन्दी–साहित्य एवं एम.ए. हिन्दू–अध्ययन** पाठ्यक्रमों में प्रवेश हेतु निर्धारित प्रपत्र पर ऑनलाइन माध्यम द्वारा आवेदन–पत्र आमंत्रित किये जा रहे हैं। कोविड़–19 महामारी से उत्पन्न स्थिति के कारण इन पाठ्यक्रमों में ऑनलाइन माध्यम से साक्षात्कार / काउन्सलिंग द्वारा प्रत्येक पाठ्यक्रम हेतु निर्धारित अर्हता पूर्ण होने पर वरीयता सूची के आधार पर योग्य अभ्यर्थियों का प्रवेश किया जाएगा।

प्रवेश अर्हता

क्रम संख्या	पाठ्यक्रम	प्रवेश अर्हता	पाठ्यक्रम विवरण	निर्धारित स्थान
1	एम.ए. हिन्दी–साहित्य	इस पाठ्यक्रम में कोई भी विद्यार्थी जो विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा मान्यता प्राप्त किसी भी संस्था से 6 सत्रीय स्नातक परीक्षा उतीर्ण की हो और आवेदक ने किसी भी विषय में स्नातक किया हो तथा एक पत्र हिन्दी विषय का अनिवार्य रूप से पढ़ा हो।	**अध्यापन माध्यम:**– हिन्दी भाषा। इस पाठ्यक्रम में अनिवार्य रूप से संस्कृत साहित्य शास्त्र का एक पत्र होगा जिसका उत्तर छात्र संस्कृत अथवा हिन्दी में लिख सकता है। यह पाठ्यक्रम दो वर्ष में चार सेमेस्टर में सम्पन्न होगा।	15
2	एम.ए. हिन्दू–अध्ययन	इस पाठ्यक्रम में कोई भी विद्यार्थी जो विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा मान्यता प्राप्त किसी भी संस्था से 6 सत्रीय स्नातक उपाधि धारक हो, वह चाहे किसी भी पाठ्यक्रम (विज्ञान, मानविकीय, वाणिज्य, अभियांत्रिकी, चिकित्सा इत्यादि)में अध्ययन किया हो अथवा देश–विदेश की किसी भी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से तत्समकक्ष उपाधि धारक हो।	**अध्यापन माध्यम:**– संस्कृत, हिन्दी तथा अंग्रेजी भाषायें। यह पाठ्यक्रम दो वर्ष में चार सेमेस्टर में सम्पन्न होगा।	10

विशेष टिप्पणी:– एम.ए. हिन्दी साहित्य एवं एम. ए. हिन्दू–अध्ययन का पाठ्यक्रम विश्वविद्यालय की वेबसाईट पर उपलब्ध है। इच्छूक अभ्यर्थी आवेदन पत्र भरने से पूर्व पाठ्यक्रम का अवलोकन करने का कष्ट करें।

आवेदन प्रक्रिया तथा आवेदन शुल्क:–

- प्रवेश–हेतु आवेदनपत्र केवल ऑनलाइन–माध्यम से किया जाएगा तथा आवेदनपत्र–शुल्क रुपये 300/– निर्धारित है। निर्धारित देय–तिथि के पश्चात् आवेदन–शुल्क रुपये 450/–होगा। **ऑनलाइन माध्यम से आवेदनपत्र प्रस्तुत नहीं करने की स्थिति में, अभ्यर्थी आवेदनपत्र को विश्वविद्यालय की वेबसाइट–www.slbsrsv.ac.in से भी डाउनलोड करके उसके साथ सम्बन्धित–दस्तावेज तथा आवेदनपत्र शुल्क का डिमांड–ड्राफ्ट किसी भी राष्ट्रीयकृत बैंक से ''कुलसचिव श्री. ला.ब.शा.रा.सं. विश्वविद्यालय'' नई दिल्ली में देय हो, बनवाकर रजिस्टर्ड–पोस्ट/स्पीड–पोस्ट से भेज सकते है।**

महत्त्वपूर्ण तिथियाँ

- ऑनलाइन माध्यम से आवेदनपत्र भरने की अन्तिम तिथि : 15/07/2021 से 31/07/2021
- साक्षात्कार / काउन्सलिंग हेतु तिथियों की घोषणा विश्वविद्यालय की वेबसाईट पर पृथक से जारी की जाएगी।
- भारत सरकार की आरक्षण नीति के अनुसार आरक्षण दिया जाएगा।

उपरोक्त सभी पाठ्यक्रमों में प्रवेश हेतु विस्तृत विवरण विश्वविद्यालय की वेबसाईट www.slbsrsv.ac.in पर उपलब्ध है।

कुलसचिव

FIRST SEMESTER

COURSE - I : LANGUAGE I : संस्कृत परिचय (अनिवार्य)

पूर्णांक : 100 (80+20)

इकाई– 1 संस्कृताध्ययन के उद्देश्य और प्रयोजन अंक– 16

1. संस्कृतवर्णमालापरिचयः – चतुर्दश माहेश्वरसूत्राणि।
   स्वर, व्यञ्जनम्, संयुक्ताक्षराणि, अनुस्वार, अनुनासिकम्, विसर्ग, वर्णविन्यासः, वर्णसंयोगः, उच्चारणस्थानम्, लेखन–प्रक्रिया, शब्दानामुच्चारणाभ्यासः।
2. शब्दरूपम् (विभक्तिप्रकरणानुसारम् आकारान्त शब्दरूपप्रक्रिया) विभक्तिः, कारकम्(अर्थसहितः सामान्यपरिचयः) –
   2.1 शब्दरूपम् (स्वरान्तम्) – अन्तिमवर्णानुसारम्, लिङ्गदृष्ट्या वचनदृष्ट्या च वर्गीकरणम्।

शब्दाः (अजन्ताः / स्वरान्ताः)						
	अकारान्तः	इकारान्तः	उकारान्तः	ऋकारान्तः	आकारान्तः	ईकारान्तः
पुल्लिङ्गम्	देव, राम	मुनि, हरि, पति	गुरु	पितृ, दातृ	–	–
स्त्रीलिङ्गम्	–	मति	धेनु	मातृ	लता	नदी
नपुंसकलिङ्गम्	फल	वारि	वस्तु	–	–	–

2.2 सर्वनाम– अस्मद्, युष्मद्, तद्, एतद्, यद्, भवत्, किम्, इदम्, अदस्, सर्व (त्रिषु लिङ्गेषु)।

2.3 शब्दरूपम् (हलन्तम् / व्यञ्जनान्तम्)–

शब्दाः (हलन्ताः / व्यञ्जनान्ताः)	
पुल्लिङ्गम्	भिषज् (भिषक्), महत्, सुहृद्, राजन्, विद्यार्थिन्, पथिन्, गच्छत् मरुत् आत्मन्, ब्रह्मन्, विद्वस्।
स्त्रीलिङ्गम्	वाच्, सरित्, दिश्, परिषद्, आशिष्, स्त्री, लक्ष्मी, श्री।
नपुंसकलिङ्गम्	जगत्, नामन्, कर्मन्, चक्षुष्, मनस्, हविष्, ब्रह्मन्, धनुष्, पयस्, दधि।
एतत्सदृशानाम् अन्येषाम् रूपाणाम् अभ्यासः।	

3. धातुरूपम् (क्रियारूपम्)–
   3.1 धातूनां सामान्यपरिचयः, आत्मनेपदम्, परस्मैपदम्।
   3.2 कालदृष्ट्या – लट्लकारः (वर्तमानकालः), लृट्लकारः (भविष्यत्कालः), लङ्लकारः (भूतकालः)
   लोट्लकारः (आज्ञार्थः), विधिलिङ्लकारः (सम्भावनार्थम्)।
   पुरुषदृष्ट्या – प्रथमपुरुषः, मध्यमपुरुषः, उत्तमपुरुषः।
   वचनदृष्ट्या – एकवचनम्, द्विवचनम्, बहुवचनम्।
   3.3 धातवः– पञ्चलकारेषु धातुरूपाणि –
   परस्मैपदिनः– पठ्, लिख्, चल्, गम्, नम्, खाद्, वद्, हस्, गै, कृ, क्री, ज्ञा, घ्रा, नी, दृश्, धृ, पत्, पा(पिब्), स्मृ, क्रुध्, शक्, पृच्छ्, इष (इच्छ्), दा, जीव्, त्यज्, धाव्, पच्, रक्ष्, सृ, रुद्, भी, नश्, स्निह्, आप्, क्षिप्, जप्, विश्, मिल्, ग्रह्, चिन्त्, पाल्, रच्, क्षल्।
   आत्मनेपदिनः– लभ्, मुद्, क्षम्, वृध्, सह्, सेव्, ईक्ष्, रुह्, कम्प्, भाष्, यत्, रम्, वन्द्, याच्, शीङ्।
   सत्तात्मकौ – अस्, भू।

इकाई– 2 अंक– 16

1. सन्धिः – स्वरसन्धिः– यण्, अयादि, गुण, वृद्धि, दीर्घ, पूर्वरूप, पररूप, प्रकृतिभाव ।
   व्यञ्जनसन्धिः– परसवर्णः, अनुनासिकः, श्चुत्वम्, ष्टुत्वम्, जश्त्वम्, चर्त्वम्, णत्व–षत्वविधिः।
   विसर्गसन्धिः – विसर्गलोपः, विसर्गस्थाने ओ, र्, स्, श्, ष्।
   अनुस्वारः, 'र्' लोपः, 'त' स्थाने 'ल्' अनुनासिकम्।
2. समासः – केवलः, अव्ययीभावः, तत्पुरुषः, कर्मधारयः, द्विगुः, बहुव्रीहिः, द्वन्द्वः।

इकाई– 3 अंक– 16

1. कारकम् कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान (सम्बन्ध), अधिकरण, सम्बोधन ।
2. उपपदविभक्तिः –
   - अभितः, अनु, उप, उभयतः, परितः, निकषा, प्रति, धिक्, विना......योगे द्वितीया।
   - अलम्, विना, हीनम्, सह, साकम्, सार्धम्, समम् ... योगे तृतीया।
   - नमः, रुच्, दा, स्पृहा, अलम् (सामर्थ्यार्थे)......चतुर्थी।
   - विना, बहिः, परम्, पूर्वम् ... योगे पञ्चमी।
   - अग्रतः, पुरतः, पृष्ठतः, वामतः, दक्षिणतः उत्तरतः ... योगे षष्ठी।
   - स्निह्, विश्वस् ... योगे सप्तमी।
3. वाच्यम्– कर्तृवाच्यम्, कर्मवाच्यम्, भाववाच्यम्।
4. प्रत्ययः– (क) कृत्प्रत्ययः – क्त, क्तवतु क्त्वा, ल्यप्, तुमुन्, शतृ, शानच्, ण्यत्, क्तिन्, ल्युट्, तव्यत्,
   अनीयर्, ण्वुल्, तृच्, घञ्।

5. अव्ययम्– (स्थानवाचि)– अत्र, तत्र, यत्र, सर्वत्र, अन्यत्र, पुरः, [illegible]
(समयवाचि)– यदा, तदा, कदा, सर्वदा [illegible]
(समुच्चयवाचि)– च, अपि, एव।
(अवस्थावाचि)– अलम्, चिरम्, [illegible]
(दिशावाचि)– [illegible]
(पूर्णतावाचि)– पर्याप्तम्, अत्यन्तम्, अलम्, [illegible]
(निषेधवाचि)– मास्तु, अलम्, न।
(सम्भावनावाचि)– किन्तु, प्रायशः, अपेक्षया, अतः, यत्–तत्।
सादृश्यवाची अव्यय– इव, नु, वा, चित्।
अव्यय– क्त्वातोसुन्कसुनः, कृन्मेजन्तः, तद्धितश्चासर्वविभक्तिः
6. उपसर्गः – आ, उत्, अनु, वि, प्र, परि, अव, उप, सम्, अप।
7. विशेष्य–विशेषणसम्बन्धः।
8. संख्या – सङ्ख्यावाचि– शब्दरूपाणि एकः, द्वौ, त्रयः, चत्वारः (त्रिषु लिङ्गेषु)।
संख्याः – 5–100

इकाई– 4

अंक– 16

1. संस्कृत शब्दावलियों का पाश्चात्य अवधारणाओं से विरोधाभास (ईश्वर / God, आत्मा / Soul, [illegible] धर्म / Religion, पति–पत्नी / Husband-wife इत्यादि)

इकाई–5

1. संस्कृत पाठ्यांशों के माध्यम से संस्कृत भाषा के पठन तथा लेखन का अभ्यास।

(1) पञ्चतन्त्रम् (2) श्रीमद्भगवद्गीता द्वादशोऽध्यायः भक्तियोगः

अंक–16

1- Sanskrit Terminologies and their contrast from western concepts (*Īshwara*/God; *Ātma*/Soul; *Dharma*/Religion; *Pati-Patni*/Husband-wife etc.).
2- Language training through reading and writing of Sanskrit passages.

इकाई–6 आन्तरिकमूल्याङ्कन

अंक–20

संस्तुत पाठ्यसामग्री–

1. रचनानुवादकौमुदी, कपिलदेव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, विशालाक्षी भवन, भूगर्भतल, चौक, वाराणसी 221001।
2. अनुवादचन्द्रिका, ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, चौक, वाराणसी 221001।
3. संस्कृत स्वयं शिक्षक, श्रीपाद दामोदर सातवलेकर, राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, नई दिल्ली 110006।
4. व्याकरणसौरभम्, सम्पादक– कमलाकान्त मिश्र, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली, 2002।
5. व्याकरणवीथि, सम्पादक– कमलाकान्त मिश्र, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली, 2003।
6. संस्कृत बालबोध, भारतीय विद्याभवन, कस्तूरबा गाँधी मार्ग, नई दिल्ली–110001।
7. सरल संस्कृत शिक्षक (भाग 1 से 8 तक), भारतीय विद्याभवन, कस्तूरबा गाँधी मार्ग, नई दिल्ली–110001।
8. सरलसंस्कृतज्ञानम् (भाग 1 एवं 2), भारतीय विद्याभवन, कस्तूरबा गाँधी मार्ग, नई दिल्ली–110001।
9. संस्कृत स्वाध्याय, केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय (राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, [illegible] जनकपुरी, नई दिल्ली, 2001।
10. दार्शनिक सम्प्रत्ययकोश, सम्पादक– शशिप्रभा कुमार, सन्तोष कुमार शुक्ल, [illegible] जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, प्रकाशक डी0के0 प्रिंटवर्ल्ड, [illegible] नई दिल्ली [illegible], 2014।
11. संस्कृतवाक्यों में वाच्यपरिवर्तन सिद्धान्त, भगवतशरण शुक्ल, साकेत साहित्य प्रकाशन, इलाहाबाद, [illegible] 1997।
12. कारकप्रकरणम्, भगवत्शरण शुक्ल, चौखम्बा संस्कृतपुस्तकालय, सी.के. 28/18, ज्ञानवापी, चौक, वाराणसी–01, 2010।
13. *An Easy Grammar of Sanskrit*, S.B.Datar, Pub.-Keshav Bhikaji Dhawale, Maharashtra, 2015.
14. *Sanskrit for English Speaking People*, Ratnakar Narale, Pub.- Prabhat Prakashan, New Delhi, 2013.
15. शुद्धिकौमुदी
16. पञ्चतन्त्रम्
17. श्रीमद्भगवद्गीता

****

COURSE II – METHODS I : प्रमाण–सिद्धान्त

(अनिवार्य)
पूर्णांक : 100 (80+20)

इकाई–1

अंक–16

1. प्रमाणसिद्धान्त का उद्भव एवं विकास।
2. प्रमाण की वैध परिभाषा क्या है? (प्राच्यपाश्चत्यावधारणानुसार)
3. शास्त्र विश्लेषण का भारतीय प्रारूप : प्रमाता, प्रमेय, प्रमाण, प्रमा।

इकाई–2

अंक–16

प्रमाणों का स्वरूप, परिभाषा, विधि तथा सीमाएँ : प्रत्यक्ष, अनुमान एवं उपमान।

इकाई–3 : विभिन्न प्रकार के प्रमाणों का स्वरूप परिभाषा, विधि एवं सीमा–

अंक–16

1) शब्द, शब्दशक्ति, (आकांक्षा, योग्यता, आसत्ति) शक्तिग्रह तथा तात्पर्य–ज्ञान तथा इनका पाश्चात्य विश्लेषण से वैपरीत्य।

इकाई–4 : अर्थापत्ति,अनुपलब्धि एवं सम्भव, ऐतिह्य, चेष्टादि — अंक–16

इकाई–5 : — अंक–20

1. प्राकृतिक विज्ञान तथा विधि शास्त्र में विभिन्न प्रमाणों का प्रयोग–
   - प्रत्यक्ष – प्रायोगिक विवरण।
   - अनुमान – (यदि अ=ब तथा ब=स तब स=अ, सामान्यतः गणित तथा प्राकृतिक विज्ञान में प्रयुक्त)।
   - उपमान – तुलनात्मकता तथा सादृश्य (गणितीय प्रतिमान / सादृश्य / समीकरण)।
   - अर्थापत्ति – पारिस्थितिकीय प्रमाण (विधिशास्त्र में अधिकतर प्रयुक्त)।
   - शब्द – आप्तोपदेश।
   - अनुपलब्धि – अप्रत्यक्ष ज्ञान।
2. प्रमाण सिद्धान्त का प्रयोग –
   अ) आनुभविक विज्ञानों में जैसे आयुर्वेद, विधिशास्त्र (न्यायिक प्रक्रिया) तथा अर्थशास्त्र।
   ब) तत्त्वज्ञान में।
3. प्रमाणों की परस्पर पूरकता (प्रमाण सम्प्लववाद) तथा विमर्श की आवश्यकता।
4. समकालीन ग्रन्थों के अध्ययन में इनका अनुप्रयोग।

इकाई–6 आन्तरिकमूल्यांकन — अंक–20

संस्तुत पाठ्यसामग्री–

1. न्यायभाष्यम् – प्रसन्नपदा टीका सहित , सम्पा. द्वारिकादास शास्त्री– सुधी प्रकाशन– वाराणसी
2. सच्चिदानन्द मिश्र, *न्यायदर्शन में अनुमान*, भारतीय विद्या प्रकाशन, वाराणसी, 2005।
3. फणिभूषण तर्कवागीश, *न्यायदर्शन*, भारतीय दर्शन अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली, सम्पादक अम्बिकादत्त शर्मा एवं सच्चिदानन्द मिश्र, 2015।
4. S.S. Barlingay, *A Modern Introduction to Indian Logic*, National Publishing House, 1965.
5. D.C. Guha, *Navya Nyāya System of Logic*, Motilal Banarsidass, 1979
6. Nandita Bandyopadhyay, *The Concept of Logical Fallacies*, Sanskrit Pustak Bhandar, 1977
7. Ratna Dutta Sharma, *Philosophical Discourse*, Allied Publishers Pvt. Ltd, 2000.
8. Srilekha Datta, *'Validity is Not Enough'* in P.K. Sen (ed.): *Logical Identity and Consistency*, Allied Publishers Limited, 1998
9. Chattopadhyay, Madhumita, *Walking along the Path of Buddhist Epistemology*, DK Printworld, 2007.
10. Kaṇāda, *Vaiśeṣika Darśanam*– with *Praśastabhāṣya* (in Bengali) – ed. by Damodarasram, Kolkata, 2010.
11. Keshava Mishra, *Tarkabhāṣā*– ed. by Gangadhar Kar, part-1, Jadavpur University, Kolkata, 2008.
12. Narayana Bhatta, *Mānameyodaya*, Calcutta Sanskrit College Research Series No. CXXXVIII, Texts No.43, 1990.
13. Debabrata Sen,*The Concepts of Knowledge*, K. P. Bagchi, Calcutta, 1984.
14. K. N. Jayatilleke, *Early Buddhist Theory of Knowledge*, Routledge Pub, London, 1963.
15. Swami Satprakasananda, Huston Smith: *Methods of Knowledge*, Advaita Ashram, London, 1995.
16. D. M. Datta: *The Six Ways of Knowing*, University of Calcutta, Calcutta, 1998.
17. Satischandra Chatterjee: *The Nyāya Theory of Knowledge*, Bharatiya Kala Prakashan, 2008.
18. Govardhan P. Bhatt : *Epistemology of the Bhaṭṭa School of Pūrva Mīmāṁsā*, Chaukhambha Sanskrit Series, Varanasi, 1962.
19. P. K. Mukhopadhyay : *Nyāya Theory of Linguistic Performance* ,Jadavpur University and K. P. Bagchi & Co., Kolkata, 1992.
20. B. K. Matilal, *Perception: An Essay On Classical Indian Theories Of Knowledge*, Oxford University Press, USA, 1986.
21. Srinivasa Rao : *Perceptual Error: The Indian Theories*, University Press of Hawai'i, Honolulu

22. Śālikanatha Mishra, *Prakaranapañcikā- Nyayasiddhi*, A. Subrahmanya Śāstrī (ed.), Banaras Hindu University, Varanasi, 1961
23. Jyogendra Nath Bagchi, *Prachina Nyāya and Mimamsa Darsana Sammata Prāmānyavāda*, Sanskrit Pustaka Bhandar.
24. न्यायसिद्धान्तमुक्तावली–विश्वनाथपञ्चाननभट्टाचार्य
25. काव्यप्रकाश– आचार्य मम्मट
26. शब्दशक्तिप्रकाशिका– जगदीशतर्कालङ्कार
27. शक्तिवाद: गदाधरभट्टाचार्य
28. वैयाकरणलघुमञ्जुषा–नागेशभट्ट।

****

COURSE III – METHODS II : वादपरम्परा तथा उनकी संस्थाएं; विकास और ज्ञान का सातत्य

(अनिवार्य)
पूर्णांक : 100 (80+20)
अंक–16

इकाई–1

1. वादपरम्परा : शास्त्रार्थ की विधि–
   अ) सम्पन्न करने की विधि, निर्णयन, अनुशीलन और अद्यतनता।
   ब) सिद्धान्त (सर्वतन्त्र– प्रतितन्त्र–अभ्युपगम–अधिकरण सिद्धान्त)
2. कथा (स्वरूप तथा प्रकार)–
   अ) वाद (स्वरूप तथा उद्देश्य)
   ब) जल्प (स्वरूप तथा उद्देश्य)
   स) वितण्डा (स्वरूप तथा उद्देश्य)

अंक–16

इकाई–2

1. ज्ञान परम्परा का संगठन–
   अ) सूत्र (सिद्धान्तों की सूत्रात्मक प्रस्तुति), भाष्य (सिद्धान्त का विवरण), वार्तिक (निर्दिष्ट तथा अनिर्दिष्ट स्थितियों की समीक्षा)।
   ब) वृत्ति (सिद्धान्त का संक्षिप्त विवरण)।
   स) टीका (सरलविधि में उदाहरण सहित विस्तृत विवरण)।
   द) टिप्पणी (किसी निश्चित बिन्दु, परिभाषा, शब्दावली, पादटिप्पणी के रूप में)

इकाई–3

1. पदैकवाक्य एवं वाक्यैक्य वाक्यता।
2. अर्थनिर्धारण की प्रविधियाँ (श्रुति, लि", वाक्य, प्रकरण, स्थान, समाख्या)
3. ज्ञान के तात्पर्यविश्लेषण के नियम षड्विधप्रक्रिया– षड्विधतात्पर्यनिर्णायक लिङ्ग।

अंक–16

इकाई–4

1. तन्त्रयुक्ति : अन्वेषण विधि, प्राकृतिक विज्ञान, तकनीकी औषधि, विधिशास्त्र, निर्माण क्षेत्र में निर्णयन के विभिन्न स्तर तथा किसी समकालीन समस्या के समाधान में इनका अनुप्रयोग।
2. नैयायिकप्रक्रिया (समस्या से निर्णय)।

अंक–16

इकाई–5 : वेदोच्चारण तथा अर्थ संरक्षण के माध्यम–

1. वेदांग।
2. पाठ–पद्धति(संहिता पाठ–पुरुषसुक्त के अनुसार, हिरण्यगर्भसूक्त, सामनस्यसूक्त–उच्चारण / अष्टविकृतिपाठ।

अंक–20

इकाई–6 आन्तरिकमूल्याङ्कन

संस्तुत पाठ्यसामग्री–

1. न्यायभाष्यम्–प्रसन्नपदा सहित–सम्पा द्वारिकादास शास्त्री–सुधीप्रकाशन, वाराणसी
2. संवादोपनिषद्, राधावल्लभ त्रिपाठी, प्रकाशक– भारत अध्ययन केन्द्र, मालवीय हेरिटेज काम्प्लेक्स, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी 221005, 2018।
3. 'भाष्यपरम्परा ज्ञानप्रवाहश्च', (भाष्यपरम्परासु ज्ञानप्रवाहसातत्यम्– उमाशंकर शर्मा ऋषि) सम्पादक – गोपबन्धु मिश्र, सोमनाथ संस्कृत विश्वविद्यालय, वेरावल, गुजरात, 2020।
4. सच्चिदानन्द मिश्र, अर्थ सामीप्य : अर्थ निर्धारण का महत्त्वपूर्ण घटक, दर्शन के आयाम, ब्रह्ममोद्य–1, न्यू भारती बुक कार्पोरेशन, 2011.

5. मीमांसान्यायप्रकाश (छायाज्ञानवतीहिन्दीव्याख्यासहित), आपदेव, राधेश्याम चतुर्वेदी, चौखम्बा संस्कृत सीरीज, वाराणसी, 2016
6. शांकरदृष्टि में सांख्यदर्शन, आशुतोष त्रिपाठी, भारती प्रकाशन, 2020।
7. *Kauṭilīya-arthaśāstram:* Hindī vyākhyopetam by Vācaspati Gairolā, Caukhambā Vidyābhavana, Vārāṇasī, 1962.
8. Radhavallabh Tripathi, *Vāda in Theory and Practice: studies in debates, dialogues, and discussions in Indian intellectual discourses*, IIAS, Shimla and DK Print World, New Delhi, 2016.
9. Kamalesh Datta Tripathi, *The Structure of the Śāstra and The Tradition of Exegesis: An Overview of The Indian Exegesis.*
10. K. N. Chatterjee, *Word and Its Meaning- A New Perspective*, Varanasi, 1980.
11. P. K. Mazumdar, *The Philosophy of Language: An Indian Approach*, Calcutta, 1976.
12. S.S. Barlingay : *A Modern Introduction to Indian Logic*, National Publisher House, Delhi, 1965.
13. S.S. Barlingay: *'Problem of Formalisation in Saṃvāda Śāstra'*, JICPR, 1996.
14. S.S. Barlingay: *'Standards of Scientific Investigation: Logic and Methodology of Science in Caraka Saṃhitā*, IJHS, 19(3), 1984.
15. [illegible]

****

COURSE IV - PRINCIPLES I : तत्त्वविमर्श (अनिवार्य)

पूर्णांक : 100 (80+20)

इकाई–1 हिन्दूवाद का मूल एवं क्रमिक इतिहास अंक–16

1. 'हिन्दू' : वंशावली, भौगोलिक सम्प्रत्यय।
2. 'हिन्दू' : भारतीय मनीषियों तथा विदेशी विद्वानों के मतों का समीक्षण
3. भारतीय ज्ञान परम्परा (अष्टादशविद्या) और इनके आचार्य।
4. भारतीय परम्परा में पदार्थ तत्त्व, (काल एवं दिक) की प्रकृति एवं पंचमहाभूतों का स्वरूप।

इकाई–2 अंक–16

1. सम्पूर्ण परम्परा में आत्मा एवं आत्मतत्त्व की अवधारणा विषयक समानता।
2. सम्प्रभुता का समानांतर सिद्धान्त (आत्मानुशीलन)–
   अ) आत्मपरिचय : वाक्सूक्त, देव्यथर्वशीर्ष, कृष्ण (इन्द्रो–मायाभिपुरुरूपमीयते)।
   ब) अर्धनारीश्वर कश्मीर शैव–दर्शन एवं बृहदारण्यक उपनिषद् (1.4.3)

इकाई–3 अंक–16

1. शक्ति और प्रकृति का सिद्धान्त : स्त्री तथा देवियों के परिप्रेक्ष्य में।
2. सौन्दर्यलहरी : सामान्य अध्ययन।
3. जैन एवं बौद्ध तथा सिक्ख परम्पराओं में स्त्री सिद्धान्त विषयक समानता।

इकाई–4 : अंक–16

1. अ) वैदिक परम्परा में एकत्त्व का सिद्धान्त, विरुद्ध मतों की स्वीकार्यता का आधार।
   ब) जैन, बौद्ध, न्याय, वैशेषिक एवं सिक्ख, सिद्धान्तों में अन्तःसंयोजनात्मकता।
2. अनन्त ज्ञान और विनम्रता का उत्स : (नासदीय सूक्त,गजेन्द्रमोक्षस्तोत्रम् श्री म.भा. 8/3 जैन, बौद्ध एवं सिक्ख ग्रन्थों के सन्दर्भ में)।
3. शब्दावली में एकत्व : एक सत्ता के अनेक अभिधान (जैसे– विष्णु, बुद्ध, सूर्य एवं प्रेम)।
4. अन्तःसंयोजनात्मकता, एकत्व, अन्योन्याश्रितता, स्वीकार्यता में अन्तःसम्बन्ध।
5. तर्क की स्वीकार्यता : असहिष्णुता, हिंसा एवं आतंकवाद का निषेध (वैदिक मन्त्र, जैन (जिनदत्त सूरि)
   तथा सिक्ख मत।

इकाई–5 : वैदिक दृष्टि अंक–16

1. वर्ण की तात्त्विक स्थिति : पुरुषसूक्त, बृहदारण्यक उपनिषद् एवं मनीषापञ्चक(शंकराचार्य)।

अंक 20

इकाई–6 आन्तरिकमूल्याङ्कन

संस्तुत पाठ्यसामग्री –

1. पुरुषसूक्त, ऋग्वेद 10 मण्डल, 90वॉं सूक्त श्रीपाद दामोदर सातवलेकर पारडी।
2. नासदीयसूक्त, ऋग्वेद 10 मण्डल, 129वॉं सूक्त, श्रीपाद दामोदर सातवलेकर पारडी।
3. वाक्सूक्त ऋग्वेद 10 मण्डल, 129वॉं सूक्त, श्रीपाद दामोदर सातवलेकर पारडी।
4. ईशादिनवोपनिषद्, हरिहरनाथ भागवत (ईश–केन–कठ–प्रश्न–मुण्डक–माण्डूक्य शाङ्करभाष्य सहित) चौखम्भा प्रकाशन, 2015।
5. वैदिकसूक्तसंग्रह, गीताप्रेस, गोरखपुर, संस्करण।
6. सौन्दर्यलहरी, पिताम्बरा पीठ, दतिया, मध्यप्रदेश।
7. शांकरज्योति (मनीषापंचक), सोमस्कन्दन, पयस्वती प्रकाशन, करौंदी, वाराणसी 2004।
8. मनीषापंचक, आदिशंकराचार्य, पी.पी.नारायण स्वामी, 2020
9. बृहदारण्यक उपनिषद्, गीताप्रेस, गोरखपुर, संस्करण, 1915.
10. पुरुषार्थचतुष्टय, प्रेमवल्लभ त्रिपाठी, चौखम्बा पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
11. भारतीय विद्यासार (भाग 1 एवं 2), भारतीय विद्या भवन, सं.– शशिबाला, ओम विकास, अशोक प्रधान, नई दिल्ली, 2018।
12. संस्कृत वाङ्मय में विज्ञान का इतिहास, सं.– कमलाकान्त मिश्र, एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली, 2003।
13. प्राचीन भारतीय आचार्य, सम्पादिका– शशिप्रभा कुमार, रवा प्रकाशन, नई दिल्ली 2016।
14. भारत की संत परम्परा और सामाजिक समरसता, कृष्णगोपाल, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल 2018।
15. दुर्गासप्तशती, गीताप्रेस, गोरखपुर, संस्करण, 2017।
16. केनोपनिषद, ईशादि नौ उपनिषद्, गीताप्रेस, गोरखपुर, 2017।
17. *The Concept of Ātman in the Principal Upaniṣads: In the Perspective of the Saṁhitās, the Brāhmaṇas, the Āraṇyakas and Indian Philosophical System*, Baldev Raj Sharma, Dinesh Publications, Jalandhar-144008, 1972.
18. जिनसेन–महापुराण
19. *Facets of Indian Heritage*, Ed. Dipti Sharma Tripathi, New Bharatiya Book Corporation, Delhi, 2008.
20. *The Tantras and Their Impact on Indian Life*, Ed. Pushpendra Kumar, Vidyanidhi Prakashan, Delhi, 2004.
21. *Relevance of India's Ancient Thinking to contemporary Strategic Reality*, Ed. Arvind Gupta & Arpita Mitra, Vivekanand International Foundation & Aryan Books International, New Delhi, 2020.
22. *Maitryupaniṣad*, S. Radhakrishnan, The Principal Upaniṣads, Harper Collins Publishers, Noida, 2016.
23. *Taittiriyopaniṣad*, S. Radhakrishnan, The Principal Upaniṣads, Harper Collins Publishers, Noida, 2016.
24. *Subala Upaniṣad*, S. Radhakrishnan, The Principal Upaniṣads, Harper Collins Publishers, Noida, 2016.
25. *Sāṁkhya Kārikā*, Ed. & Tr. Ramāśaṅkara Tripathi, Chaukhaba Krishnadas Academy, Varanasi, 2015.
26. *Tarkabhāṣā- Yaśovijaya*, Ed. Dayānanda Bhārgava, Motilal Banarasidas, 1973.
27. *Vaiśeṣika Gaṇitīya Paddhati*, N.G. Dongre, Varanasi, S.S.V., 1965.
28. *Vedāntaparibhāṣā* (viṣaya paricchedah), Dharmarajadhvarindra, ed. by Panchanan Shastri, śak 1883.
29. *Sankhyatattvakaumudi*, Vacaspati Misra, ed. by Narayan Chandra Goswami, 1921.
30. *Classical Indian Metaphysics*, Stephen H. Philips, Delhi: Motilal Banarasidass, 1997.
31. *Indian Realism*, Jadunath Sinha, London: Kegan Paul, 1938.
32. *Indian Realism*, P.K. Mukhopadhyaya, Calcutta: K.P. Bagchi 1984.
33. *Vaiśesika Philosophy*, H. Ui, Varanasi: Chowkhambha Sanskrit Series 22, reprinted in 1962
34. *Tarkabhāṣā Vol– II*, Gangadhar Kar, Kolkata: Mahabodhi Books, 2014 Gopinath Bhattacharya, *Essays in Analytic Philosophy*.
35. *Nyāya Tattva Parikramā*, K. K. Banerjee.
36. *Facets of Indian Thought*, Betty Heimann, George Allen & Unwin Ltd, London, 1964.

****

SECOND SEMESTER

COURSE V – METHODS III : विमर्श की पाश्चात्य प्रविधि (अनिवार्य)

पूर्णांक : 100 (80+20)

इकाई 1 अंक–16

1. स्वतन्त्रान्वेषण की सीमा हेतु पारम्परिक पाश्चात्य प्रतिबन्ध।
2. पारम्परिक प्रविधियाँ (ऐतिहासिक जीवनियाँ इत्यादि)।
3. रीतिवाद एवं नव–समीक्षावाद : रीति एवं काव्यात्मकता के महत्त्व, न कि लेखक का।

इकाई–2 अंक–16

1. मार्क्सवाद एवं समीक्षावादी चिन्तन–
   क) विश्लेषणात्मक उपागमों के रूप में वर्ग एवं आर्थिक–सिद्धान्तों की भूमिका।
   ख) समीक्षावादी सिद्धान्त– एक सोद्देश्यात्मक सिद्धान्त : इसके इतिहास का पुनरावलोकन एवं यूरोप में उन्नत वामपंथी चिन्तन के अभिप्राय।
   ग) अन्तोनियो ग्राम्शी और आधिपत्य।

इकाई–3

1. संरचनावाद–
   क) सोस्यूर, क्लाउड लेवी स्ट्रास संस्कृत भाषा–विज्ञान का प्रभाव, परिणामात्मक भिन्नताएँ (शब्दों के अन्तर्निहितार्थ नहीं होते)।
   ख) वस्तुनिष्ठता पर बल, वैज्ञानिक दृष्टिकोण।
2. उत्तर–संरचनावाद–
   क) देरिदा एवं औपनिषदिक सापेक्षवाद के प्रभाव।
   ख) विखण्डन– सन्दर्भ–हानि एवं अर्थ का अन्तहीन स्थगनादिक, समीक्षक का अर्थ रचना स्वातन्त्र्य।

इकाई–4 अंक–16

1. ऐतिहासिकतावाद, नव ऐतिहासिकतावाद कल्चरल मैटिरिलिज्म–
   क) तटस्थ अन्वेषण की असंभावना एवं ऐतिहासिक मूल्यपरक निर्णयों के निर्माण की आवश्यकता।
   ख) महान् एवं लोकप्रिय साहित्यों के बीच अभेद : शक्ति–प्रयोग एवं अवसान।
   ग) गैर–मानक व्यवहारों में प्रबल अभिरूचि : कृषक विद्रोह, झाड़–फूँक, परवस्त्रधारण, यथा 'अन्य'।
2. नृजातीय अध्ययन, प्राच्यवाद, उत्तर–आधुनिकतावाद, उत्तर–औपनिवेशिक आलोचना और लैंगिक अध्ययन तथा फेनोमेनोलाजी।

इकाई–5 अंक–16

1. मनोवैज्ञानिक विश्लेषण (फ्रायडीय एवं युंगीय एवं लाकनीयन)।
2. विज्ञान एवं संज्ञान के क्षेत्र में देकार्तीय दृष्टि।
3. अपचयन के परे जाना : भारतीय ज्ञान–तंत्र की भूमिका।
4. भारतीय प्रविधियों उपयोग कर समकालीन पाठों का विश्लेषण (यथा प्रविधि– I एवं II पाठ्यक्रमों में निरूपित, उपयुक्त पाश्चात्य दृष्टिकोण)।

इकाई–6 आन्तरिकमूल्याङ्कन अंक–20

संस्तुत पाठ्यसामग्री–

1. मार्क्सवाद और रामराज्य, हरिहरानन्दसरस्वती धर्मसम्राट् करपात्री स्वामी, गीताप्रेस, गोरखपुर।
2. *Colonial Discourse and Post-Colonial Theory: A Reader*, Williams, Patrick and Laura Chrisman, Columbia Press, NY, 1993.
3. *History and Historians in the 19th Century*, GP Gooch, Forgotten Books, London, 2018.
4. *The Historian Craft*, Marc Block, Vintage, NY, 1964
5. *The Creation of Patriarchy*, Lerner Gerda, Oxford University Press, 1986.
6. *Gender and Politics of History*, Joan Scott, Oxford University Press, 1989.
7. *White Mythologies*, History and the West, Rubert Young, Routledge, 1990.

10. *The Age of Revolution*, 1789-1848, Eric Hobsbawn, Weidenfeld and Nicolson, World Publishing Company, London, 1962
11. *Essays in Indian History: towards a Marxist Perception*, Irfan Habib, Anthem Press, London, 2002.
12. *Marxist Historiographies: A Global Perspective*, Editors - Wang and Iggers, Routledge, London, 2015.
13. *Marxist History Writing for the 21st Century*, Edit. Chris Wickham, OUP/British Academy, London, 2007.
14. *Marxism and the Methodologies of History*, Gregor McLennan, Verso Books, London, 1981.
15. *Reflections on the Marxist Theory of History*, Paul Blackledge, Manchester University Press, Manchester, UK, 2006.
16. *Postmodernism, or, the Cultural Logic of Late Capitalism*; Fredric Johnson, Duke University Press, NC, USA, 1989.
17. *Postmodernism: A Very Short Introduction*, Christopher Butler, Oxford- Illustrated edition, Oxford University, London, 2008.
18. *Postmodern Theory:* Steven Best & Douglas Kallener, Guilford Publication, NY, 1992.
19. *The Origins of Postmodernity*, Perry Anderson, AAkar Books, Delhi, 2013.
20. *Orientalism*, Edward Said, Vintage, NY, 1979.
21. *Culture and Imperialism*, Edward Said, Publisher, Chatto & Windus, 1993.
22. *Orientalism: History, Theory and the Arts;* John McKenzie, Chatto and Windus, UK, 1993.
23. *Interrogating Orientalism: Contextual Approaches and Pedagogical Practices*, Editors: Hoevelerand & Cass, Ohio State University Press, USA, 2013.
24. *Orientalism and Modernism: The legacy of China In Pound and Williams*, Zhaoming Qian, Duke University Press, NC, 1993.
25. *Structuralism and Poststructuralism for Beginners*, Donald D. Parlmer, For Beginners Press, 2007.
26. *Poststructuralism(A very Short Introduction)*, Catherine Belsey, Oxford- Illustrated edition, Oxford University, London, 2008.
27. *Michel Foucault: Beyond Structuralism and Hermeneutics*, Dreyfus and Rabinow, University of Schicago Press, 1983.
28. *Structuralism and Since: From Levi Strauss to Derrida;* Editor: John Sturrock, Oxford University Press, 1981.
29. *Genealogies and Speculation: Materialism and Subjectivity since Structuralism*, Suhail Malik and Armen Avanessian, Bloomsbury Academic, UK, 2016.
30. *Architecture and Structuralism: The Ordering of Space*, Hertzberger, NAI Publishers, Neitherlands, 2014.
31. *History of Structuralism*, Vol. 1: *The Rising Sign*; 1945-1966, Dosse, University of Minnesota Press, USA, 1998.
32. *Critical Theory to Structuralism; Philosophy, Politics and the Human Sciences*, David Ingram, Routledge, London, UK, 2014.
33. *Philosophy: Structuralism for Unity, Visions of Truth for Justice and Success*, Ronnie Lee, Outskirts Press, USA, 2011.
34. *Toward a Philosophy of the Act*, M.M. Bakhtin, translation & notes by Vadim Liapunov, University of Texas Press, USA, 1993.
35. *The Dialogic Imagination : Four Essays*, edited by Michael Holquist, translated by Caryl Emerson & Michael Holquist, University of Texas Press, USA, 1982.

****

COURSE VI - PRINCIPLES II: धर्म एवं कर्म विमर्श

(अनिवार्य)
पूर्णांक : 100 (80+20)

इकाई–1 अंक–16

1. धर्म– परिभाषाओं का सर्वेक्षण (श्रुति, स्मृति, कल्प, धर्मशास्त्र तथा सम्पूर्ण परम्परा में)–
   अ) उत्तदायित्व तथा सेवा–भाव में सम्बन्ध।
   ब) प्रवृत्ति तथा निवृत्तिमूलक धर्म, अभ्युदय एवं निःश्रेयस् (पुरुषार्थ) की सिद्धि हेतु।

इकाई–2 अंक–16

1. वैदिक, जैन, बौद्ध एवं सिक्ख परम्परा में सभी स्तरों पर धर्म एक संगठनात्मक सिद्धान्त–
   अ) व्यक्तिगत (आश्रम धर्म) और वर्णाश्रम धर्म को चुनने की स्वतंत्रता।
   ब) समाज और समुदाय : आचार, व्यवहार, प्रायश्चित्त एवं संबंधित विधिशास्त्र।
   स) राज्य तथा राजा का दायित्व : राजधर्म।
   द) ब्रह्माण्ड और ऋत की अवधारणा।

इकाई 3 अंक—16

1. विश्वास और उपासना पर धर्म की प्रधानता—
   अ) सत्य वैष्णव (वैष्णव जन तो...), शैव, सिक्ख (देहु शिवा वर मोहे एसो...), बौद्ध (अष्टांगिक मार्ग) की परिभाषाएँ।
   ब) धर्म का आविर्भावात्मक स्वरूप, साक्षात्कार की शृंखलाओं पर आधारित : धर्म जडात्मक इकाई नहीं।
2. धर्म, रिलीजन, पन्थ, मजहब एवं सम्प्रदाय पदों की व्याख्या।

इकाई—4 अंक—16

1. कर्म : परिभाषाओं का सर्वेक्षण—
   अ) कर्म, विकर्म एवं अकर्म (भगवद्गीता)।
   ब) छः श्रेणियाँ : काम्य, नित्य, निषिद्ध, नैमित्तिक, प्रायश्चित्त एवं उपासना।
2. अ) व्यक्ति के लिए सकाम कर्म का प्रावधान।
   ब) निष्काम कर्म : ब्रह्म या सर्वम् एक वास्तविक कर्ता के रूप में।
   जिनयशीलता तथा कर्त्तव्यकर्म दायित्व मात्र के निर्वहण लिए।

इकाई—5 अंक—16

1. कर्म का सकल्पस्वातन्त्र्य, लेकिन कर्मफल पर पूर्णनियन्त्रण का अभाव, कर्मफल की अपरिहार्यता।
2. कर्म और संस्कार (भागवतपुराण में राजा भरत के मृग बनने की कथा)।

इकाई—6 आन्तरिकमूल्याङ्कन अंक—20

संस्तुत पाठ्यसामग्री—

1. धर्मशास्त्र का इतिहास, पी.वी. काणे, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, भाग—5, सन् 2019, सप्तम संस्करण।
2. हिन्दूधर्म जीवन में सनातन की खोज, विद्यानिवास मिश्र, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 2013।
3. उपनिषद् दर्शन का रचनात्मक सर्वेक्षण, रामचन्द्र दत्तात्रेय रानाडे, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 1971।
4. जैन धर्म, पं0 कैलाशचन्द्र जी सिद्धान्त शास्त्री (प्राच्य श्रमण), भारती, मुजफ्फरनगर, 1998।
5. जैन दर्शन मनन और मीमांसा, आचार्य महाप्रज्ञ, जैनविश्वभारती, लाडनूँ (राजस्थान), आदर्श साहित्य संघ प्रकाशन, चुरू, राजस्थान, 2014।
6. भगवद्गीता, शाकरभाष्य (हिन्दी अनुवाद सहित), गीताप्रेस, गोरखपुर, सवत् 2065।
7. कर्मयोगशास्त्र (Hindu Philosophy of Ethics), बाल गगाधर तिलक, शक संवत् 2012, 1934।
8. सनातनधर्मोद्धार (भाषा—भाव—प्रभातीकासमेत)(खण्ड 1 से 4), उमापति द्विवेदी, प्रेरक महामना मदन मोहन मालवीय, प्रकाशक, श्रीरामकृष्णदास, बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी प्रेस, वाराणसी, सवत् 1999।
9. *Sanātana Dharma: An Advance Text Book of Hindu Religion and Ethics*, Bhagwandas and Annie Besant, The Theosophical Publishing House, Madras, 1940.
10. *Dharma, the categorial Imperative*, edited by: Ashok Vohra, Arvind Sharma, Mrinal Miri, D.K. Printworld, New delhi, 2005.
11. *Jain Dharma kā Maulika Itihāsa*, vols. I & II, Acharya Hastimala, Gaj Singh Rathore, Premraj Bujawal, Jaipur, Jaina Itihas Samiti, Lal Bhavan, Jaipur, 4th Ed., 1999.
12. *Bauddha Dharma Darśana*, Acharya, Narendradeva, Patna, Bihar Rashtrabhasha Parishad, 1956.
13. *Dharma and ethics : the Indian ideal of human perfection*; [revised version of papers presented at the National Seminar on *Dharma*, Virtue and Morality: the Indian Ideal of Human Perfection, held at Kanpur in 2005] by : D.C. Srivastava, Bijoy H. Boruah, Decent Books, New Delhi, 2010.
14. *The Dharmaśāstra : an introductory analysis by Brajakishore Swain*; Akshaya Prakashan, Delhi, 2004.
15. *Social & Political Implications of Concepts of Justice and Dharma*, Chousalkar Ashok S., Mittal Publications, Delhi, 1986.
16. *The Hindu vision*, Anantanand Rambachan, Motilal Banaridaas, Delhi, 1999.
17. *Dharma in early Brahmanic, Buddhist and Jain traditions*, Vincent Sekhar, Sri Satguru Publication, Delhi, 2003.
18. *The development and place of Bhakti in Śaṅkara Vedānta*, Ādyā Prasād Mishra, Munshiram Manoharlal, Delhi, 1967.
19. *Indian religious thought*, by Sarvepalli Radhakrishnan, Delhi : Orient, 2006.
20. *Hindu View of Life*, Sarvepalli Radhakrishnan, New Delhi: HarperCollins, 2012.
21. रत्नकरण्डकश्रावकाचार: — आचार्यसमन्तभद्र

****

COURSE VII - PRINCIPLES IVA : वैदिक परम्परा के सिद्धान्त

(वैकल्पिक)
पूर्णांक : 100 (80+20)

इकाई–1 : वैदिक परम्परा एवं उसके आधारभूत तत्त्व — अंक 16

1. वेद : अर्थ एवं व्युत्पत्ति, पर्याय, विभिन्न परम्पराएं।
2. वेद, वेदत्रयी, समाम्नाय, निगम, स्वाध्याय आदि का एकत्व।
3. ऋषि, देवता एवं छन्द का स्वरूप।
4. वैदिक संहिताओं एवं शाखाओं का उद्भव एवं विकास।
5. वेद, ब्राह्मण, आरण्यक एवं उपनिषदों का एकशरीरत्व अथवा एकात्मता।
6. निगमागम का अन्तःसम्बन्ध।

इकाई–2 : यज्ञ एवं इष्टियाँ– — अंक–16

1. काम्य एवं निष्काम यज्ञ।
2. यज्ञ की पात्रता एवं प्रारम्भिक विधान।
3. अग्निहोत्र, सन्ध्योपासन एवं वृत्ति–निरोध।
4. अग्निशाला, पंचाग्नि विवरण एवं यागशाला का विज्ञान।
5. ऋत, सत्य, दीक्षा, तप एवं यज्ञ के प्रत्यय।
6. शुभ एवं अशुभ की अवधारणाएँ (पाप–पुण्य, ऋत–अनृत, स्वर्ग–नरक आदि)।
7. विनियोग का स्वरूप– ऋषि, देवता, छन्द एवं उनका विनियोग।

इकाई–3 : यज्ञमीमांसा– — अंक–16

1. मीमांसाशास्त्र का संक्षिप्त परिचय ।
2. वैदिक यज्ञों का परिणाम (अपूर्व आदि)।
3. देवतत्त्व की अवधारणा–

इकाई–4 : वेद व्याख्या की प्रमुख परम्परायें– — अंक–16

1. वेद की सार्वजनीन एवं सार्वभौमिक उपादेयता–
   अ) व्यक्तित्व निर्माण के सन्दर्भ में।
   ब) स्वस्थ समाज के निर्माण के सन्दर्भ में।
   स) राष्ट्र निर्माण के सन्दर्भ में।

इकाई–5 : — अंक–16

1. वैदिक निर्वचन– याज्ञिक तथा आध्यात्मिक।
2. वैदिक पर्यावरण विज्ञान।

इकाई–6 आन्तरिकमूल्याङ्कन — अंक–20

संस्तुत पाठ्यसामग्री–

1. वैदिक संहितायें– *ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद*।
2. वैदिक साहित्य एवं संस्कृति, आचार्य बलदेव उपाध्याय, चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी।
3. ऋग्वेदभाष्यभूमिका, आचार्य सायण।
4. अर्थसंग्रह, लौगाक्षिभास्कर।
5. भारद्वाज श्रौतसूत्र, सी.जी. काशीकर, पूना 1964।
6. ईश्वरसंहिता– भाग 1 (प्रस्तावना), संपादकीय वी वरदाचारी एवं गया चरण त्रिपाठी, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र।
7. मीमांसा कोश, केवलानन्द सरस्वती, 1952।
8. ऋक्सूक्त वैजयन्ती, हरिदामोदर दास वेलणकर, पूना 1965।
9. वैदिक देवताओं का उद्भव एवं विकास, गया चरण त्रिपाठी, नई दिल्ली, 2014।
10. वैदिक देवता दर्शन, प्रभु दयाल अग्निहोत्री, नई दिल्ली, 1989।
11. वेदरश्मि, वासुदेव शरण अग्रवाल, वाराणसी, 1964।
12. श्रौत कोश (तीन भागों में), सी.जी. काशीकर, पूना, 1964।
13. धर्मशास्त्र का इतिहास (प्रथम भाग), पी.वी. काणे, पूना।
14. संस्कृत साहित्य का इतिहास (भाग प्रथम–द्वितीय), संपादक, ब्रजविहारी चौबे एवं ओमप्रकाश पाण्डेय, लखनऊ, 1996।
15. यज्ञतत्त्वप्रकाश, चिन्नस्वामी शास्त्री, सं. पट्टाभिराम शास्त्री, मोती लाल बनारसीदास, वाराणसी, 1993।
16. वैदिक यज्ञों का सचित्र कोश, एच.जी.रानाडे, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, 2004।
17. पिंगलछन्दसूत्रम्, कपिलदेव द्विवेदी एवं श्यामलाल सिंह, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2019।
18. शतपथब्राह्मण (प्रथम भाग) भूमिका मात्र, युगलकिशोर मिश्र, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी।
19. वेद रहस्य, श्री अरविन्द, श्री अरविन्द आश्रम, पाण्डीचेरी, 2015।
20. *Change and continuity in Indian Religion*, J Gonda, London, 1965.

21. *Dual Deities in the religion of the Veda*, J Gonda, London, 1974.
22. *Brihaddevatā or Index to the Gods of the Rgveda*, Shaunak, Ed. Rajendra Lal Mitra, 1893.
23. *Sacrifice in the Rgveda*, Poddar K R, Bharatiya Vidya Bhawan, Bombey, 1953.
24. *The Vedic Etymology*, Fateh Singh, Kota 1952.
25. *Vedic Studies* Vol. I, A. Venkat Subiah, Mysure, 1932.
26. *Rgvedic Culture*, A. C. Das, Cosmo Publications India, Calcutta, 2003.
27. *Communication with God*, G. C. Tripathi, New Delhi, 2009.
28. *Vedic Religion*, K. Chattopadhyaya, Dept. of Philosophy and Religion, BHU, Varanasi.

****

COURSE VII - PRINCIPLES IVB : जैन परम्परा के सिद्धान्त

(वैकल्पिक)
पूर्णांक : 100 (80+20)

इकाई : 1 जैन तीर्थंकरों का इतिहास — अंक—16

(i) तीर्थंकर परम्परा।
(ii) ऋषभदेव।
(iii) पार्श्वनाथ।
(iv) महावीर।

इकाई : 2 जैन तत्त्वमीमांसा — अंक—16

(i) नवतत्त्व तथा उनके स्वरूप
(ii) जीव।
(iii) अजीव। —ईश्वरतत्त्व (पञ्चपरमेष्ठि)
(iv) सम्यग्दर्शन।

इकाई : 3 जैन ज्ञानमीमांसा — अंक—16

(i) सम्यक् ज्ञान।
(ii) प्रमाण ज्ञान।
(iii) परोक्ष प्रमाण। मति एवं श्रुतज्ञान।
(iv) प्रत्यक्ष प्रमाण।

इकाई : 4 केवल ज्ञान (सर्वज्ञता)प्रमुख सिद्धान्त — अंक—16

(i) आस्रव, संवर।
(ii) निर्जरा, बन्ध, मोक्ष।
(iii) अनेकान्तवाद
(iv) स्याद्वाद।
(v) नयवाद।
(vi) अहिंसा

इकाई : 5 जैन आचार मीमांसा — अंक—16

(i) जैनश्रावकाचार
(ii) जैनश्रमणाचार

इकाई--6 आन्तरिकमूल्याङ्कन — अंक—20

संस्तुत पाठ्यसामग्री—

1 जैन दर्शन मनन और मीमांसा, आचार्य महाप्रज्ञ, जैन विश्वभारती, लाडनूँ (राजस्थान, आदर्श साहित्य संघ प्रकाशन, चुरू राजस्थान।
2 जैन दर्शन, महेन्द्र कुमार जैन, न्यायाचार्य, श्री गणेशवर्णी दिगम्बर जैन संस्थान, नरिया, वाराणसी 221005।
3 जैन धर्म, कैलाशचन्द्र जी सिद्धान्तशास्त्री (प्राच्य श्रमण भारती), मुजफ्फरपुर, 1998।
4 जैन तत्त्वमीमांसा, फूलचन्द सिद्धान्तशास्त्री, अशोक प्रकाशन मन्दिर, वाराणसी, 1960।
5 चार तीर्थंकर, सुखलाल संघवी, श्री जैन संस्कृति संशोधन मण्डल, वाराणसी।
6 तत्त्वार्थसूत्र, उमास्वाति, विवेचक, सुखलाल संघवी, पार्श्वनाथ विद्यापीठ, वाराणसी 221005।
7 भगवान् महावीर एवं जैन दर्शन, महावीर सरन जैन, लोक भारती प्रकाशन, दरबारी बिल्डिंग, एम0जी0 मार्ग, इलाहाबाद, 2013।

COURSE VII - PRINCIPLES IVC : बौद्ध परम्परा के सिद्धान्त

(वैकल्पिक)
पूर्णांक : 100 (70+30)
अंक 16

इकाई–1

बुद्ध की मौलिक शिक्षाएँ– चार आर्य सत्य, अष्टांगिक मार्ग, मध्यम मार्ग, सत्ता के तीन लक्षण, ब्रह्म विहार, प्रतीत्यसमुत्पाद।

अंक 16

इकाई–2

निब्बान, क्षणभंगवाद, शील, समाधि और प्रज्ञा, पुनर्जन्म और कर्म सिद्धान्त विषयक आरंभिक बौद्ध अवधारणाएँ।

अंक–16

इकाई–3

बौद्ध–धर्म के सम्प्रदाय– सर्वास्तिवाद, वैभाषिक, सौत्रान्तिक,

अंक–16

इकाई–4

माध्यमिक (शून्यवाद), योगाचार (विज्ञानवाद)।

अंक–16

इकाई–5

अर्हत और बोधिसत्त्व के आदर्श स्वरूप का परिचय, पूर्णता का सिद्धान्त, त्रिकाय सिद्धान्त।

अंक–20

इकाई–6 आन्तरिकमूल्याङ्कन

संस्तुत पाठ्यसामग्री–

1. बौद्ध धर्म एवं दर्शन, आचार्य नरेन्द्र देव, मोतीलाल बनारसीदास, नई दिल्ली, 1954।
2. *What the Buddha Taught*, Rahul Walpola, Reprint, London: 2007.
3. *Buddhist Thought in India*, Conze, E., Delhi: 1996.
4. Kalupahana, D.J., *Buddhist Philosophy: A Historical Analysis*, Hawaii: 1976.
5. Kalupahana, D.J., *The Principles of Buddhist Philosophy*, Delhi: 1992.
6. Murti, T.R.V., *The Central Philosophy of Buddhism*, London: 1975.
7. Murti, T.R.V., *Studies in Indian Thought*, Delhi: 1979.
8. Chatterjee, A.K., *The Yogācāra Idealism*, Delhi: 1975.
9. Stcherbatsky, Th., *Central Conception of Buddhism*, London: 1923.
10. Mookerjee, S., *Buddhist Philosophy of Universal Flux*, Calcutta: 1935.
11. Singh, Indra Narain, *Philosophy of University Flux in Theravāda Buddhism*, Vidyanidhi Prakashan, Delhi, 2002.

****

COURSE VIII- LANGUAGE IIA: वेदांग– शिक्षा, व्याकरण, निरुक्त, छंद, कल्प एवं ज्योतिष (वैकल्पिक)

पूर्णांक : 100 (80+20)
अंक–16

इकाई–1 : शिक्षा –

1. श्रुत्युक्त शिक्षा का स्वरूप।
2. शिक्षोक्त वर्णोच्चारण।
3. वेद की विभिन्न शाखाओं के अनुसार विभिन्न 'शिक्षा' ग्रन्थ।
4. शिक्षानुमत स्वरभक्ति का स्वरूप।
5. शिक्षा एवं प्रातिशाख्य का अन्तःसम्बन्ध।

अंक–16

इकाई–2 : व्याकरण–

1. वेदा"ो में व्याकरण नामक वेदा" की मुख्यता।
2. व्याकरण शास्त्र का प्रयोजन।
3. व्याकरण शास्त्र की प्राचीन एवं नव्य परम्परा।
4. व्याकरण शास्त्र के अनुसार प्रकृति और प्रत्यय का विवेचन।
5. व्याकरण शास्त्र के द्वारा सुबन्त, तिङन्त, कारक एवं समास पदों का व्युत्पादन।

अंक–16

इकाई–3 : निरुक्त–

1. निरुक्त शास्त्र का स्वरूप एवं प्रयोजन।
2. वेदार्थावबोध में निरुक्त शास्त्र का योगदान।
3. निरुक्त के अनुसार शब्दनिर्वचन प्रकार।
4. निरुक्त के अनुसार मन्त्रों का त्रैविध्य।
5. निरुक्तानुरूप देवतास्वरूप चिन्तन।

इकाई 4 : छन्दःशास्त्र अंक–16

1. गायत्र्यादि वैदिकच्छन्दों का स्वरूप।
2. अनुष्टुप्यादि लौकिकच्छन्दों का स्वरूप।
3. वार्णिक एवं मात्रिक छन्दों का विवेचन।
4. दैवीगायत्र्यादि वैदिकच्छन्दों का विभाजन।
5. लौकिकच्छन्दों में भगणादि गणों की उपादेयता।

इकाई–5 अंक–16

1. कल्प और ज्योतिष का स्वरूप
2. कल्प और ज्योतिष का प्रयोजन
3. कल्प एवं ज्योतिष के अवान्तर भेद
4. कल्प एवं ज्योतिष का सामाजिक प्रमाणिक उपादेयता

इकाई–6 आन्तरिकमूल्याङ्कन अंक–20

संस्तुत पाठ्यसामग्री–

1. याज्ञवल्क्य शिक्षा, अमरनाथ शास्त्री, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, दिल्ली।
2. नारदीय शिक्षा, श्रीपीताम्बरापीठ, संस्कृत परिषद्, दतिया।
3. पाणिनीय शिक्षा, शिवराज आचार्य कौण्डिन्यायन, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 2013।
4. पिङ्गलछन्दसूत्रम्, कपिलदेव द्विवेदी, श्यामलाल सिंह, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2015।
5. ऋग्वेद प्रातिशाख्यम्, वीरेन्द्र कुमार वर्मा, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली।
6. अष्टाध्यायी, प्रथमा वृत्ति, ब्रह्मदत्त जिज्ञासु, रामलालकपूर ट्रस्ट, सोनीपत, हरियाणा।
7. निरुक्त, यास्क, उमाशंकर शर्मा ऋषि, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी।
8. व्यास शिक्षा।
9. शिक्षावल्ली, तैत्तिरीयोपनिषद्, गीताप्रेस, गोरखपुर।
10. छन्दोमंजरी, गंगादास, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, 2015।
11. वृत्तरत्नाकर, केदार भट्ट, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, 2015।
12. *Chandas and Vedānga,* Madhavi S. Narsalay, Tirumalar Tirupati Devasthanams, Tirupati, 2019.
13. *Origin and Development of Sanskrit Metrics,* Arati Mira, The Asiatic Society.
14. *Paniniyana Sikṣā or the Sikṣā Vedānga ascribed to Pāṇini, Manomohan Ghosh,* University of Calcutta, 1938.
15. *Shikṣāsangrah of Yāgyavalkya and other,* Rama Prasad Tripathi, Sampoornanand Sanskrit University, Varanasi.
16. *Nighaṭu & Nirukta,* Lakshman Swarup, Motilal Banarsidas, Varanasi, 2015.
17. *Rgvedabhāṣyabhūmikā,* Ācārya Sāyaṇa.

****

COURSE VIII : LANGUAGE IIB - पालि भाषा तथा साहित्य (वैकल्पिक)

पूर्णांक : 100 (80+20)

इकाई–1 : पालि व्याकरण– अंक–16

सन्धि, कारक, समास, काल, धातुगण, शब्दरूप।

इकाई–2 : थेरवाद बौद्ध सैद्धान्तिक पारिभाषिक शब्दों पर संक्षिप्त आलेख बोधिसत्व, बुद्ध, दुःखम्, दुःखसमुदाय, दुःखनिरोधम्, अनिच्छता, अनत्ता, मेत्ता, करुणा, उपेक्खा, अरहत्ता, निब्बान, अंक–16

इकाई–3 : प्रतीत्यसमुत्पाद, पञ्चस्कन्ध, मज्झिमाप्रतिपदा, शील, समाधि, प्रज्ञा। अंक–16

इकाई–4 : पालि साहित्य का परिचय तथा इतिहास– अंक–16

त्रिपिटकों का समान्य अध्ययन, त्रिपिटकोत्तरवर्ती साहित्य।
बुद्धवचनों का वर्गीकरण।
वंश साहित्य।

इकाई–5 : अनुवाद–पालि से अंग्रेजी / हिन्दी / संस्कृत अंक–16

आन्तरिकमूल्याङ्कन अंक–20

2. Geiger, W., *Pāli Literature and Language*, Eng. Trans. C. Ghosh, reprint, Calcutta, 1968.
3. Jagdish, B.J., *Pāli Mahavyākaraṇa*, Sāranātha, 1968.
4. Warder, A.K., *Introduction to Pāli*, London, 1974.
5. Warder, A.K., *Pāli Metre*, London, 1967.
6. *Bālāvatāra* (Ed.) Swami Dwarikadasa Shastri, Bauddha Bharati, Varanasi, 1975.
7. *Pali Vyākaraṇa* (3rd Ed.) by Bhikshu Dharmarakshit, Jnana Mandala Pvt. Ltd, Varanasi, Samvat, 2028.
8. Buddhadatta, A.P., *The Higher Pāli Course*, Colombo, 1951.
9. Buddhadatta, A.P., *The New Pāli Course*, 2 parts, Colombo, 1946.
10. Law, B.C., *History of Pāli Literature*, 2 volumes; Kegan Paul Trubner& Co. Ltd., London, 1970.
11. Winternitz, M., *A History of Indian Literature*, 2 volumes, New Delhi, 1968.
12. Upadhaya, B.S., *Pāli Sāhitya Kāltihāsa*, Hindi Sāhitya Sammelana, Prayagaraja, 2008.
13. Dalwis, James, *Introduction to Kachchāyan's Grammar of the Pāli Language*, Colombo, 1863.
14. Muller, E, *A Simplified Grammar of the Pāli Language*, Trübner& Co, London, 1884.
15. Kumar, Bimalendra, *Gandhavaṃsa (History of Pāli Literature)*, Eastern Book Linkers, Delhi, 1992.
16. Hazra, K. L., *Pāli Language and Literature* (2 vols.), New Delhi: D.K. Printworld(P)Ltd, 1998.

****

COURSE VIII - LANGUAGE IIC : प्राकृत भाषा एवं साहित्य

(वैकल्पिक)

पूर्णांक : 100 (80+20)

इकाई–1 : प्राकृत भाषा– अंक–16

1. उत्पत्ति, परिभाषा एवं विकास।
2. प्रथमस्तरीय प्राकृत, मध्यस्तरीय प्राकृत, तृतीय स्तरीय प्राकृत एवं आधुनिक भारतीय भाषाओं के विकास में प्राकृत भाषा का योगदान।
3. वैदिक साहित्य में प्राकृत भाषा के तत्त्व।

इकाई–2 : प्राकृत व्याकरण– अंक–16

1. कारक, सन्धि, समास, क्रिया, तद्धित, कृदन्त।
2. रूपतत्त्व : शब्दरूप एवं धातुरूप।

इकाई–3 : अर्धमागधी आगम साहित्य– अंक–16

1. अंग साहित्य, द्वादश अंग, उपांग साहित्य और द्वादश उपांग।
2. छेदसूत्र, मूलसूत्र, प्रकीर्णक और चूलिका।

इकाई–4 : शौरसेनी आगम साहित्य– अंक–16

1. शौरसेनी टीका साहित्य।
2. आचार्य कुन्दकुन्द की रचनाएँ।

इकाई–5 : पउमचरियम (कुछ अंश) अंक–16

इकाई–6 आन्तरिकमूल्याङ्कन अंक–20

संस्तुत पाठ्यसामग्री–

1. भाषा विज्ञान, भोलानाथ तिवारी, किताब महल प्रा0 लि0, इलाहाबाद, 1951।
2. अभिनव प्राकृत व्याकरण, नेमिचन्द शास्त्री, तारा पब्लिकेशन्स, कमच्छा, वाराणसी, 1963।
3. प्राकृत भाषा एवं साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, नेमिचन्द शास्त्री, तारा पब्लिकेशन्स, कमच्छा, वाराणसी, 1966।
4. प्रौढ़ प्राकृत अपभ्रंश रचना सौरभ भाग–2, कमल चन्द सौगानी, अपभ्रंश साहित्य अकादमी, जैन विद्या संस्थान, जयपुर (राजस्थान), 2003।
5. प्राकृत भाषाओं का व्याकरण, रिचर्ड पिशल, अनुवादक हेमचन्द्र जोशी, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना, 1958।
6. प्राकृत वाक्य रचना बोध, आचार्य महाप्रज्ञ, जैन विश्वभारती, लाडनूँ, राजस्थान 1991।
7. जैन साहित्य का बृहद् इतिहास, वेचर दास जोशी, प्रकाशक पार्श्वनाथ विद्याश्रम शोध संस्थान, वाराणसी, 1966।
8. प्राकृत साहित्य का इतिहास, जगदीश चन्द जैन, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 1961।
9. शौरसेनी प्राकृत भाषा एवं साहित्य का इतिहास, इन्दु जैन, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी, 2011।
10. कुन्दकुन्दभारती, कुन्दकुन्दाचार्य, श्रुत भण्डार व ग्रन्थ प्रकाशन समिति, फलटण, महाराष्ट्र, 1970।
11. भारतीय संस्कृति में जैन धर्म का योगदान, हीरालाल जैन, मध्य प्रदेश शासन साहित्य परिषद्, भोपाल, 1962।
12. जैन साहित्य का इतिहास, कैलाश चन्द्र शास्त्री, श्री गणेशप्रसाद वर्णी जैन ग्रन्थमाला, भदैनी, वाराणसी,1963।
13. Introduction to Prakrit, A. C. Woolner, New Delhi, 1917.

****

THIRD SEMESTER

COURSE IX - PRINCIPLES III : पुनर्जन्म–बन्धन–मोक्ष–विमर्श (अनिवार्य)

पूर्णांक : 100 (80+20)

इकाई–1 अंक–16

1. जीव की अवधारणा।
2. बन्धन की परिभाषाएँ।
   बन्धन की कोटियाँ : प्राकृतिक, वैकृतिक और दाक्षिणक (सांख्यकारिका 44, सांख्यतत्त्वकौमुदी)।
3. बन्धन का मूल कारण (गीता 3.37–3.43) तथा बन्धन की प्रक्रिया (गीता 2.62–67);
   अज्ञान (वेदान्त), मिथ्याज्ञान (न्याय), मिथ्यादृष्टि (बौद्ध), अविवेक (सांख्य)।

इकाई–2 अंक–16

1. पुनर्जन्म का सिद्धान्त–
   अ) धर्म अभ्यास का संबल।
   ब) विनाश–भय के विचलन से ऊपर उठना।
2. प्रक्रिया : प्रतीत्यसमुत्पाद का सिद्धान्त (बौद्ध)।

इकाई–3 अंक–16

1. औपनिषद् दृष्टि
2. दार्शनिक दृष्टि
3. आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टि

इकाई–4 अंक–16

1. मोक्ष का अर्थ एवं परिभाषाएं।
2. मोक्ष– दुःख निवृत्ति–
   अ) परम (अनन्त असीम) आनन्द उपनिषद् की दृष्टि में।
   ब) जीवनमुक्ति और विदेहमुक्ति (उदाहरण)।
   स) संन्यासी और गृहस्थ के लिए मोक्षविषयक पूर्वापेक्षाएँ।

इकाई–5 अंक–16

1. मोक्ष मार्ग का निर्धारण–
   अ) विभिन्न योगमार्ग : अभ्यास, कर्म, भक्ति, ज्ञान।
   ब) भक्ति परम्परा एवं उसका योगदान।
2. आचार्यों की भूमिका।

इकाई–6 आन्तरिकमूल्याङ्कन अंक–20

संस्तुत पाठ्यसामग्री–

1. ऋग्वेद संहिता, 10वाँ मण्डल, 57वाँ सूक्त, श्रीपाद दामोदर सातवलेकर पारडी।
2. बृहदारण्यकोपनिषद्, द्वितीय (श्वेतकेतु), तृतीय तथा नवम ब्राह्मण, गीताप्रेस संस्करण, 1915।
3. कठोपनिषद्, गीताप्रेस, गोरखपुर, प्रथम संस्करण, 1983।
4. मुण्डकोपनिषद्, गीताप्रेस, गोरखपुर, प्रथम संस्करण, 2019।
5. श्वेताश्वतरोपनिषद्, गीताप्रेस, गोरखपुर, तृतीय संस्करण, 1949 ।
6. कौषीतकि ब्राह्मणोपनिषद्।
7. श्रीमद्भगवद्गीता, गीताप्रेस, गोरखपुर ।
8. सनातनधर्मोद्धार: (भाषा–भाव–प्रभाटीकासमेत:)(खण्ड 1 से 4), उमापति द्विवेदी, प्रेरक महामना मदन मोहन मालवीय, प्रकाशक, श्रीरामकृष्णदास, बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी प्रेस, वाराणसी, संवत् 1999।
9. भक्तमाल, नाभादास, स्वामी रामभद्राचार्य की मूलार्थबोधिनी टीका के साथ प्रकाशित, जगद्गुरु रामभद्राचार्य विकलांग विश्वविद्यालय, चित्रकूट, उत्तरप्रदेश, 2014।
10. भगवद्भक्तिरसायनम्, मधुसूदन सरस्वती, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी,।
11. गीताव्याख्यानमाला, गिरिधरशर्मा चतुर्वेदी, प्रकाशन विभाग काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी, 2006।
12. मैत्र्युपनिषद्, सं. रामतीर्थ पाण्डेय, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, प्रथम संस्करण, 2001।
13. सांख्यतत्त्वकौमुदी, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, 2012।
14. Indian Philosophy vol. 1, Judunath Sinha, New Central Book Agency, Calcutta, Second revised book, 1987.
15. *The development and place of Bhakti in Śaṅkara Vedānta*, Ādyā Prasād Mishra, Munshiram

COURSE X – PRACTICS I : रामायण

(अनिवार्य)
पूर्णांक : 100 (80+20)

इकाई–1 अंक–16

1. रामायण इसका पाठ निर्धारण तथा विस्तार– भारत तथा विदेशों में–
   अ) रामकथा का वैदिक आधार।
   ब) मूलकथा की दिव्योत्पत्ति के पारम्परिक ग्रन्थ, जो उसी रूप में महर्षि वाल्मीकि के रामायण में वर्णित।
   स) भारत से बाहर विकसित (श्रीराम–)श्रद्धापरक, जो महर्षि वाल्मीकि की मूल कथा से बहुत अधिक भिन्न हैं।

इकाई–2 अंक–16

1. पारम्परिक रामायणों की लोकप्रियता तथा प्रासंगिकता।
2. रामायण एक उपजीव्य ग्रन्थ : भारतीय साहित्य एवं कला (लोककला, शास्त्रीय कला तथा समकालीन कला)।
3. अध्यात्म रामायण, कम्बन, कृतिवास, बलराम, आनन्द, अभूत, तुलसी

इकाई–3

1. मर्यादापुरुषोत्तम राम।
2. रामायण में मानवीय तथा मानव–प्रकृति सम्बन्ध।

इकाई–4 अंक–16

1. समाज में ऋषियों की भूमिका : नायक निर्माता के रूप में।
2. रामायण में स्त्रीविमर्श : सीता, मन्दोदरी, तारा, अनुसूया, कैकेयी, उर्मिला के सन्दर्भ में।

इकाई–5 : रामराज्य (राम–भरत संवाद– वाल्मीकि रामायण)। अंक–16

इकाई–6 आन्तरिकमूल्याङ्कन अंक–20

संस्तुत पाठ्यसामग्री–

1. श्रीमद्वाल्मीकि रामायण, हिन्दी अनुवाद सहित, गीता प्रेस, गोरखपुर, संस्करण 17, 2002।
2. श्रीमद्वाल्मीकि रामायण, (भाग 1–4), उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान, न्यू हैदराबाद, लखनऊ, 1998
3. रामायण–महाभारत, काल, इतिहास, सिद्धान्त, पोद्दार वासुदेव, 'प्रज्ञाभारती' भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली।
4. संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास, तृतीय खण्ड(आर्षकाव्य) रामायण, उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थानए न्यू हैदराबाद, लखनऊ।
5. इतिहास पुरुष द कास्मिक पैसेज ऑफ टाइम, पोद्दार वासुदेव, अनुवादक माधवराव सप्रे।
6. रामायणमीमांसा, धर्मसम्राट् हरिहरानन्द सरस्वती करपात्री स्वामी, प्रकाशक राधाकृष्ण धानुका प्रकाशन संस्थान, रमणरेती, वृन्दावन, पिन– 281121, मथुरा, नवम्बर 2001।
7. रामकथा in India Abroad-Satyabrat Shastri

****

COURSE XI – DISCIPLINE IA : लोकवार्ता

(वैकल्पिक)
पूर्णांक : 100 (80+20)

इकाई–1 : लोकवार्ता का अर्थ और अवधारणात्मक सातत्य– अंक–16

(अ) जन की अवधारणा– वैदिक एवं पुराण साहित्य के सन्दर्भ में।
(ब) जीवोपत्ति की अवधारणा–वैदिक–पुराण, संस्कृतादि वाङ्मय में।
(स) लोक की अवधारणा– संस्कृत पालि एवं प्राकृत वाङ्मय में।

इकाई–2 : अंक–16

(अ) लोकवार्ता– अर्थ, परम्परा एवं आधुनिक परिप्रेक्ष्य।
(ब) लोक और वेद, लोक और शास्त्र– अन्तःसम्बन्ध।

इकाई–3 : भाषा और साहित्य– अंक–16

(अ) लोकभाषाएँ, लोकसाहित्य– अर्थ एवं परम्परा।
(ब) जनजातीय वाचिक साहित्य।
(स) लोककथाएँ, लोकगीत– स्वरूप एवं विषय–वस्तु।

इकाई–4 : लोकधर्म, विश्वास तथा संस्कृति– अंक–16

(अ) विश्वदृष्टि, देवी–देवता, पूजापद्धति एवं उपासना, व्रत, पर्व, त्यौहार, मेले और यात्राएँ।

(ब) लोकविश्वास, शकुन–अपशकुन विचार, भूत–प्रेत तथा जादू–टोना इत्यादि
(स) सामाजिक नियम, आचार–व्यवहार पद्धति

इकाई–5 : ज्ञान–विज्ञान एवं कौशल अंक–16

(अ) प्रत्यक्ष प्रकृति दर्शन
(ब) मौसम विज्ञान, कृषि तथा दशज चिकित्सा।
(स) लोकास्थान, लोकनाट्य, धर्मगाथाएँ, लोककलाएँ, भूमि एवं भित्ति अलंकरण।

इकाई–6 आन्तरिकमूल्यांकन अंक–20

संस्तुत पाठ्यसामग्री

1. गाथासप्तशती, सातवाहन हाल, निर्णय सागर प्रेस, मुम्बई, 1933।
2. भारतीय आदिवासी (उनकी संस्कृति और सामाजिक पृष्ठभूमि), ललित प्रसाद विद्यार्थी, हिन्दी समिति, राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन मार्ग, हिन्दी भवन, लखनऊ, 1975।
3. रचना सचयन, वासुदेवशरण अग्रवाल, कपिला वात्स्यायन, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2012।
4. लोक साहित्य विज्ञान, सत्येन्द्र, शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी, आगरा, द्वितीय संस्करण, 1971।
5. लोक साहित्य की भूमिका, कृष्णदेव उपाध्याय, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण, 2019।
6. लोक संस्कृति की रूपरेखा, कृष्णदेव उपाध्याय, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण, 2019।
7. हमारे देवी–देवता, सस्ता साहित्य मण्डल, राधावल्लभ त्रिपाठी, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2017।
8. भारतीय प्रतीकों का लोक, श्याम सुन्दर दुबे, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2017।
9. उत्तर प्रदेश की लोककला भूमि एवं भित्ति अलंकरण, विमला, जयश्री प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथमसंस्करण, 1987।
10. लोक में भारत की अन्तर्व्याप्ति, कपिल तिवारी, नेहा तिवारी, भारतनीतिप्रतिष्ठान, नईदिल्ली, प्रथमसंस्करण, 1916।
11. लोक और शास्त्र अन्वय और समन्वय, दयानिधि मिश्र, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1915।
12. कला और संस्कृति, वासुदेव शरण अग्रवाल, साहित्य भवन लिमिटेड, इलाहाबाद, 1952।
13. जनपदीय अध्ययन की भूमिका, सदानन्द शाही, भोजपुरी अध्ययन केन्द्र, का.हि.वि., वाराणसी, 2017।
14. मानव और संस्कृति, श्यामाचरण दुबे, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1960।
15. लोकगीत संग्रह, रामनरश त्रिपाठी।
16. लोकगीतों की सामाजिक व्यवस्था, श्रीकृष्ण दास, साहित्य भवन लिमिटेड, इलाहाबाद, 1956।
17. हमारा ग्राम्य साहित्य, रामनरश त्रिपाठी, हिन्दी मन्दिर, प्रयाग, 1940।
18. लोकवार्ता, स. पीयूष दाहिया, भारतीय लोक कला मण्डल, उदयपुर, राजस्थान, 2002।
19. *Ancient Indian Folk Cults*, Vasudev Sharan Agrawal, Prithvi Prakashan, Varanasi, First Edition, 1970.

****

COURSE XI – DISCIPLINE IB : भारतीय नीतिशास्त्र (वैकल्पिक)

पूर्णांक : 100 (80+20)

इकाई–1 : अंक–16

(1) आचारशास्त्र का इतिहास और स्वरूप। (मनु, याज्ञवल्क्य, महाभारत, श्रीमद्भगवद्गीता–17 अध्याय)

इकाई–2 : अंक–16

(1) नैतिक शिक्षाओं के विविध रूप– प्रभुसम्मित, सुहृत्सम्मित एवं कान्तासम्मित उपदेश।
(2) सनातन धर्म के आधारभूत नैतिक सिद्धान्त : (स्वामीविवेकानन्द, अरविन्दो, दयानन्द, गाँधी, मालवीयादि)

इकाई–3 : अंक–16

(1) नीति ज्ञान के स्रोत तथा साधन।
(2) नैतिक चेतना का विकास : मानवीय मूल्य का आधार और आत्मनियन्त्रित मूल्य (प्रायश्चित्त विधान)।
(3) मौलिक नैतिक सम्प्रत्यय: शुभ तथा अशुभ, न्याय तथा अन्याय, पुण्य तथा पाप, अधिकार तथा कर्त्तव्य।
(4) नैतिक निर्णय (दैवी तथा आसुरी, सम्पत्– श्रीमद्भगवद्गीता)।

इकाई–4 : अंक–16

(1) ऋण की अवधारणा।
(2) कर्मस्वातन्त्र्य, संकल्पस्वातन्त्र्य का सिद्धान्त, कर्त्तव्यवाद (श्रीमद्भगवद्गीता)।
(3) पुरुषार्थचतुष्टय (महाभारत)।

कौटिलीय अर्थशास्त्र, चरक तथा सुश्रुत संहिता से।

(ब) व्यावहारिक वेदान्त।

इकाई–6 आन्तरिकमूल्यांकन अंक 20

संस्तुत पाठ्यसामग्री–

1. सनातनधर्मोद्धार (खण्ड 1 से 4), उमापति द्विवेदी, प्रेरक महामना मदन मोहन मालवीय, प्रकाशक श्रीरामकृष्णदास, बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी प्रेस, वाराणसी, 1912।
2. आत्रेय, भीखनलाल, भारतीय नीति–शास्त्र का इतिहास, हिन्दी समिति, सूचना विभाग, उत्तर प्रदेश, प्रथम संस्करण, 1964।
3. रघुनाथ गिरि : आचारशास्त्र भारतीय एवं पाश्चात्य, न्यू भारतीय बुक कोर्पोरेशन, दिल्ली, 2009।
4. तिलक, बालगंगाधर, गीता रहस्य, पिलग्रीम्स प्रकाशन, वाराणसी, 2014।
5. महाभारत, वेदव्यास, पंडित श्रीपालसातवलेकर स्वाध्याय मण्डल पारडी जिला बालसड, प्रथम संस्करण, 1968।
6. श्रीमद्भगवद्गीता, मधुसूदन शास्त्री (सविमर्श 'बालक्रीडा') हिन्दी टीका सहित, संवत् 2000।
7. अर्थशास्त्र, श्रीयुत प्रमथनाथ विद्यालंकार (मोतीलाल बनारसी दास), संवत् 1990।
8. पंचतन्त्र, गंगासागर राय (विष्णुशर्मा रचित ज्योत्सना–मृदुला संस्कृत ग्रन्थ सुधाकर मालवीय, 2014।
9. वाल्मीकिरामायण, गीताप्रेस, गोरखपुर, 2016।
10. चरकसंहिता (1–4 भाग), चक्रपाणिदत्त विरचित आयुर्वेददीपिका व्याख्या एवं आयुर्वेददीपिका की तत्त्वप्रकाशिनी हिन्दी व्याख्या, लक्ष्मीधर द्विवेदी, चौखम्बा ऑफिस भवन।
11. सुश्रुतसंहिता, आयुर्वेदतत्त्वसंदीपिका व्याख्योपेता, संदीपिका हिन्दी टीका सहित, स० अम्बिकादत्त शास्त्री।
12. काव्यप्रकाश, मम्मट (प्रथम उल्लास), गजानन शास्त्री मुँसलगाँवकर, चौखम्बा, वाराणसी।
13. Ratna Dutta Sharma and Indrani Sanyal, *Dharmanîti o Sruti*, Mahabodhi Book Agency with Jadavpur University, 2009.
14. Dikshit Gupta, *Nītividyā*, Paschimbanga Rajya Siksha Parishad, 2007.
15. Sailajakumar Bhattacharya, *Vedic Ethics*, Allied Publishers, 2000.
16. Amita Chatterjee, *Bhāratīya Dharmanīti*, Jadavpur University Press, 2013.
17. N.K. Brahma, *Philosophy of the Hindu Sādhanā*, London, 1934.
18. Surama Dasgupta, *Development of Moral Philosophy in India*, Munshiram Manoharlal Publishers, New Delhi, 1994.
19. Saral Jhingram, *Aspects of Hindu Morality*, Motilal Banarsidass Publ., Delhi, 1989.
20. B.K. Matilal, *Ethics and Epics*, Oxford University Press, Oxford, 2002.
21. Sitansu S. Chakravarti, *Ethics of the Mahābhārata*, Munshiram Manoharlal Publishers, Delhi 2006.
22. Swami Vivekananda : *Practical Vedānta*, Calcutta : Adaaita Ashrama, 1964 Sri Aurobindo : *The Life Divine.*
23. भतृहरि–नीतिशतकम्, विदुरनीति, चाणक्यनीति, शुक्रनीति।

****

COURSE XII – DISCIPLINE IIA: नाट्य

(वैकल्पिक)

पूर्णांक : 100 (80+20)

इकाई–1 अंक–16

(अ) भरतमुनि का नाट्यशास्त्र : महत्त्व एवं संरचना।

(ब) नाट्य का उद्भव, स्वरूप और महत्त्व।

(स) प्रेक्षागृह।

इकाई–2 अंक–16

(अ) करण और अंगहार, संस्कृत नाटक के प्राथमिक तत्त्व (पूर्वरंग)।

(ब) रस, भाव, अभिनय– आंगिक तथा वाचिक (नाटक के संवाद तथा उसकी प्रस्तुति)।

(स) सात्त्विक (अभिनय का भावपूर्ण पक्ष) आहार्य (साजसज्जा, परिधान, रंगसामग्री निर्माण तथा उपयोग)।

इकाई–3 अंक–16

(अ) दशरूपक और अठारह उपरूपक (स्वरूप और संरचना), धर्मी (रंगमंच प्रस्तुतीकरण के द्विविध प्रारूप), वृत्ति (चतुर्विध), प्रवृत्तियाँ (चतुर्विध)।

(ब) स्वर, आतोद्य (यन्त्र संगीत) और सिद्धि।

इकाई–4 अंक–16

(अ) संस्कृत नाटक का संक्षिप्त इतिहास।

(ब) भारतीय लोकरंगमंच परम्परा : एक प्रस्तावना।

इकाई–5 अंक–16

नाट्यशास्त्र की परवर्ती परम्परा

इकाई–6 आन्तरिकमूल्यांकन अंक–20

संस्तुत पाठ्यसामग्री–

1. दशरूपकम् (अवलोकसहित), धनञ्जय व धनिक, काशीनाथ पाण्डुरंग परब, निर्णयसागरमुद्रणालय, मुम्बई, शक 1819।
2. दशरूपकम्, साहित्यशास्त्रसमुच्चय भाग 4.1, सम्पादक रेवाप्रसाद द्विवेदी, सदाशिव कुमार द्विवेदी, प्रकाशक– कालिदाससंस्थान, 28 महामनापुरी, पोस्ट काशीहिन्दूविश्वविद्यालय, वाराणसी 221005, 2019।
3. दशरूपकम् (अवलोकसहित), धनञ्जय व धनिक, अनुवादक रामजी उपाध्याय, भारतीयविद्यासंस्थान, वाराणसी–2।
4. संस्कृत काव्यशास्त्र का आलोचनात्मक इतिहास, रेवाप्रसाद द्विवेदी, प्रकाशन कालिदास संस्थान, 28 महामनापुरी कालोनी, पो का.हि.वि.वि., वाराणसी -221005।
5. *Nātyaśāstra of Bharatmuni* with English Translation of Manmohan Gosh (Calcutta) Hindi Translation, Shree Bābulal Shukla. .
6. *Sangīta-Ratnākara* with any standard translation.
7. *Natyaśāstra*(*Kāvyalakṣaṇakhaṇḍa*) Hindi Translation & Gloss, Ed. & Translator, Rewa Prasad Dwivedi, Indian Institute of Advanced Study (IIAS), Shimla & Aryan Books International, New Delhi, 2005.
8. *Bharata, the Nāṭyaśāstra* by Kapila Vatsyayan, Sahitya Academy, New Delhi, 1996.
9. *Nātya Samgaraha*, Dr. Radhaballabh Tripathi.
10. *History of Hindu Drama*, Ghose, M.M., Calcutta Firma, 1957.
11. *The Oxford Companion to Indian Theatre*, Editor: Aanand Lal, Oxford University Press, 2004.
12. *A New Bibliography of Sanskrit Drama*, Radha Vallabh Tripathi, Pratibha Prakashan, New Delhi, 1998.
13. *Samskrita Drama*, A.B. Kieth.
14. *The History of the Classical Sanskrit Literature*, M.Krishnmachāriyar. Vaijayanti Press, Madras, 1906.
15. *Hindu Drama*, (vol. ICPR) Author K.D. Tripathi, Ed. N.S.S. Raman.
16. *Traditional Indian Theatre Multiple Streams*, Kapila Vatsyayan, National Books Trust, New Delhi, 1986.
17. *The Traditional Indian Theatre*, Varad Pandey, New Delhi, 1979.

****

COURSE XII – DISCIPLINE IIB : तुलनात्मक धर्म

(वैकल्पिक)
पूर्णांक : 100 (80+20)

इकाई–1 अंक–16

अ) तुलनात्मक धर्म का अध्ययन और इसका उद्देश्य।
ब) हिन्दू धर्म के धार्मिक सिद्धान्त : वैदिक तथा आगमिक वाङ्मय।
स) धार्मिक बहुलता, धार्मिक अनन्यता और धर्मों की एकता।
द) धार्मिक अनुभूति का स्वरूप।

इकाई–2 अंक–16

अ) वेदमूलक धर्म– वैष्णव, शैव एवं शाक्तमत।
ब) हिन्दू, बौद्ध और जैन प्रस्थानों में समावेशीकरण के तत्त्व।

इकाई–3 अंक–16

अ) ईरानी धर्म (जरथुस्त्र : सिद्धान्त और व्यवहार)।
ब) सिक्ख धर्म : उत्पत्ति और विकास।
स) भारतवर्ष का इस्लाम तथा ईसाई धर्म से परिचय।
द) भारतवर्ष में नवीन धार्मिक आन्दोलन तथा उनके अनुयायी।

इकाई–4 अंक–16

अ) पवित्रता का प्रत्यय, धार्मिक ग्रन्थ की अवधारणा और धर्म से इनका सम्बन्ध।
ब) धर्मविज्ञानीय अभिकथन के प्रकार तथा धार्मिक भाषा की संरचना।
स) भारतीय धर्म में आख्यान, रूपक और प्रतीक का स्वरूप और अर्थ।
द) शंकराचार्य और उदयनाचार्य का महान् अवदान।

इकाई–5 अंक–16

द) धर्मवाद एवं विज्ञानवाद।
इ) तुलनात्मक धर्म के सिद्धान्तकारों का सामाजिक दार्शनिक।

इकाई–6 आन्तरिकमूल्याङ्कन अंक 20

संस्तुत पाठ्यसामग्री–

1. ईश्वरप्रतिपत्तिप्रकाश, मधुसूदनसरस्वती, हिन्दी अनुवाद रेवाप्रसाद द्विवेदी, प्र. काशीहिन्दूविश्वविद्यालय 28 महामनापुरी, वाराणसी 221005, 2019।
2. शांकरज्योति (मनीषापंचक), सोमस्कन्दन, पयस्वती प्रकाशन, करौंदी, वाराणसी 2004।
3. निगम–आगम समन्वय, अयाचित प्रकाशन श्री पीताम्बरा पीठ, दतिया।
4. भारतीय धर्म दर्शन, आचार्य बलदेव उपाध्याय, विश्वविद्यालय प्रकाशन, 2014।
5. वेद रहस्य, श्री अरविन्द, श्री अरविन्द आश्रम, पाण्डीचेरी, 2015।
6. Secred books of the east, Chief Editor Maxmular.
7. Secred books of Hindu series, editor S.C. Basu.
8. *Religion a discourse in realist philosophy*, Pradyotkumar Mukhopadhyaya, University of Calcutta, 2014.
9. *Religious Language and Others Papers*, edited by N. S.S. Raman, Dept. of Philosophy, Banaras Hindu University, Varanasi.
10. *Reconstruction of Religious Thought in Islam*, M. Iqbal, Lahore: Ashraf, 1980.
11. Religion of Man, R. Tagore, Religion of Man, London; Unwin Books, 1961.
12. *Buddha and His Dhamma* in *Writings and Speeches*, B.R. Ambedkar, Bombay: Educational Dept., Govt of Maharashtra.
13. *The Quest History and meaning in Religion*, Mircea Eliade, the University of Chicago Press, 1984.
14. *The Sacred & The Profane The Nature of Religion*, Mircea Eliade, A Harvest Book World, New York, 1956.
15. *Knowing Beyond Knowledge*, Thomas A. Forsthoefel, Motilal Banarasidass, 2007.
16. *Philosophical Foundation of Hinduism*, R.S Mishra, Munshiram Manoharlal Pub, 2002.
17. *Who are the Sudras?* and *The Annihilation of Caste* in *Writings and Speeches*, B.R. Ambedkar, Bombay: Educational Dept. , Govt of Maharashtra.S.K. Maitra, *The Ethics of the Hindus*, Calcutta University Press, 1925.
18. *Classical Indian Ethical Thought: A Philosophical Study of Hindi, Jaina and Buddhist Morals*, Kedar Nath Tiwari, Motilal Banarsidass Publishers, 1998.
19. Ernst Cassirer, Language and myth, translated by Susanne K. Langer, Dover Publication New York, 1953.
20. Foundation of Indian Culture, Vol. I-II, G.C. Pandey, Motilal Banarsidas, 1990.
21. Neoscience in Indian Philosophy, C. N. Mishra, Mithila Research Institute, Darbhanga.
22. Vachaspati Mishra On Adwita Vedant, S.S. Hasurkar, Mithila Research Institute, Darbhanga.
23. शान्ति भक्तिः– आचार्य पूज्यपाद

****

FOURTH SEMESTER

COURSE XIII – PRACTICS II : महाभारत

(अनिवार्य)
पूर्णांक : 100 (80+20)

इकाई–1 अंक–16

1. महाभारत का काल – पाठपरम्परा के पारम्परिक तथा आधुनिक स्रोत– युधिष्ठिर, कृष्ण एवं विक्रम संवत्।
2. मूल कथा तथा अन्य संस्करणों की समीक्षा (भारतीय तथा अन्य)।

इकाई–2 अंक–16

1. एक सम्पूर्ण (विश्वकोश ग्रन्थ) जो धर्म और संसार की सूक्ष्मता के बारे में शिक्षित करे।
   क) धर्म के दश लक्षणों के बारे में दस कथायें : धृति (गंगावतरण), क्षमा (वशिष्ठ और विश्वामित्र), दम (ययाति और पुरु), अस्तेय (युधिष्ठिर–यक्ष सम्वाद), शौच (सैरन्ध्री–विराटपर्व), इन्द्रियनिग्रह (धर्मव्याध के इन्द्रियनिग्रह विषयक उपदेश), धी उपदेश (सावित्री), विद्या (मनुष्य–शेर–सॉप–हाथी की कथा–स्त्री पर्व), सत्यम् (हरिश्चन्द्र / सत्यकाम) अक्रोध (विदुर)।

इकाई–3 अंक–16

1. महाभारत भारतीय साहित्य, कला (लोक, शास्त्रीय तथा समकालीन कलाओं) के लिए उपजीव्य काव्य (संदर्भ ग्रन्थ)।

इकाई–4 अंक–16

1. विदुरनीति तथा भगवद्गीता (सामान्याध्ययन)।
2. राजनीति तथा शासन के सम्बन्ध में भीष्म का युधिष्ठिर को उपदेश।

इकाई– 5 अंक–16

1. भारतवर्ष की भौगोलिक एवं राजनीतिक सीमाएँ।
2. स्त्रीविमर्श।

इकाई–6 आन्तरिकमूल्याङ्कन अंक–20

संस्तुत पाठ्यसामग्री–

1. महाभारत, वेदव्यास, अनुवादक– श्रीपाद शास्त्री सातवलेकर, प्रकाशन– स्वाध्याय मण्डल, पारडी बालसड, 1968।
2. संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास, तृतीय खण्ड– आर्षकाव्य (महाभारत), उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान, प्रथम संस्करण, विक्रम संवत् 2057 (2000 ई.)।
3. महाभारतम् (संक्षिप्त दो खण्ड), महर्षि वेदव्यास, गीताप्रेस, गोरखपुर, 1946।
4. *Social & Political Implications of Concepts of Justice and Dharma,* Chousalkar Ashok S., Mittal Publications, Delhi, 1986.
5. *Moral Dilemmas in the Mahābhārata,* B.K. Matilal, Indian Institute of Advanced Study, Shimla and Motilal Banarsidas, New Delhi, 1989.
6. *Ethics and Epics,* B.K. MatilalOxford University Press, Oxford, 2002.
7. *Ethics of the Mahābhārata,* Sitansu S. Chakravarti, Munshiram Manoharlal Publishers, Delhi, 2006.
8. *The Dialogic Imagination : Chronotope and Heteroglossia,* Ed. by Michael Halquist, Austin and London, University of Texas Press, 1981.

****

COURSE XIV – PRACTICES IIIA : पुराणपरिचय

(वैकल्पिक)
पूर्णांक : 100 (80+20)

इकाई–1 : अंक–16

1. पुराण शब्द का अर्थ। अष्टादश पुराण और उपपुराण परिचय, पुराणों के द्वारा वेदों का उपबृंहण।
2. पुराण पंच लक्षण, पुराणों तथा आगम का अन्तःसम्बन्ध।
3. पुराणों में कालगणना।

इकाई–2 : अंक–16

1. धर्म, दिनचर्या, संस्कार, अतिथि सत्कार की अवधारणा।
2. तप, यज्ञ, दान एवं क्रिया (इष्ट–आ–पूर्त–दत्त)।

अंक–16

इकाई–3 :

1. पुराणों में भारतीय जन, भाषा तथा भूगोल का वर्णन– संस्कृत, एकीकरण की भाषा के रूप में।
2. आख्यान एवं उपाख्यान : परिभाषा।
3. पुराणों में ऋषि एवं ऋषिकायें (बृहद्देवता प्रोक्त 27 ऋषिकायें)।

अंक 16

इकाई–4 :

4. पुराणों में कतिपय विशिष्ट स्त्री तथा पुरुष चरित–
   – वेदव्यास, दधीचि, मान्धाता, मुचकुन्द, नहुष, रन्तिदेव, राम, भरत, अम्बरीष, पुरंजन।
   – पार्वती, अनुसूया, अहिल्या, सीता, मन्दोदरी, कुन्ती, द्रौपदी।

अंक–16

इकाई–5 :

(1) द्वादशारण्य। (2) सप्तपुरियाँ। (3) तीर्थस्थल चार धाम। (4) द्वादश
(5) ज्योतिर्लिंग। (6) 52 शक्तिपीठ। (7) सप्तद्वीप।

अंक–20

इकाई–6 आन्तरिकमूल्याङ्कन

संस्तुत पाठ्यसामग्री–

1. पुराणपरिशीलन, गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना, 1970।
2. पौराणिक कोश, राणा प्रताप शर्मा, ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी, वि.सं. 2014।
3. अष्टादशपुराणदर्पण, ज्वालाप्रसाद मिश्र, वेंकटेश्वर प्रेस, मुम्बई, 1993।
4. पुराणपर्यालोचन, कृष्णमणि त्रिपाठी, सं. विश्वनाथ पाण्डेय, चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी 1976।
5. पुराणविमर्श, बलदेव उपाध्याय, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 1965।
6. व्रतपरिचय, हनुमान शर्मा, गीताप्रेस, गोरखपुर, संवत् 2058।
7. सनातनधर्मोद्धारः (भाषा–भाव–प्रभाटीकासमेतः)(खण्ड 1 से 4), उमापति द्विवेदी प्रेरक महामना मदन मोहन मालवीय, प्रकाशक, श्रीरामकृष्णदास, बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी प्रेस, वाराणसी, संवत् 1999।
8. पुराणों में कुछ भौगोलिक सन्दर्भ – वायुपुराण–1/ 34–35; ब्रह्माण्डपुराण– 2/15; मत्स्यपुराण–1/21; नारदपुराण– 30; पद्मपुराण–सृष्टिखण्ड, 3–9; कूर्मपुराण– 1/44–49; वाराहपुराण– 7/4–99; ब्रह्मपुराण– 1/8–26; देवीपुराण–8/4–13; लिङ्गपुराण– 1/46; गरूडपुराण–1/54–57; शिवपुराण–3/17–18 आदि। श्रीमद्भागवत– 5/16–20; विष्णपुराण– 2/2–6; मार्कण्डयपुराण– 51–57;
9. *Puranic Records on Hindu Rites and Customes*, R.C.Hazara, Motilal Banarasidas, New Delhi 1975
10. Ancient Historical Tradition, Pargiter F.E, Nabu Press, 2010.
11. *Geography, People and Geodynamics of India in Purānas and Epics*, Valdiya K.S, First Ed., Aryan Books International Publication, New Delhi, 2012.
12. *Geographical Concepts in Ancient India*, Bechan Dubey, National Geographical Society of India, Banaras Hindu University, Varanasi, 1967.
13. *Geographical Horizon of The Mahabharat*, S.N.Pandey, Bharat Bharati Publication, Durgakund, Varanasi, 1980.
14. The Geographical Information in Skand Puran, U. K. Jha, Mithila Research Institute, Darbhanga.

****

(वैकल्पिक)

COURSE XIV- PRACTICES IIIB : भारतीय स्थापत्य

पूर्णांक : 100 (80+20)

अंक–16

इकाई–1 : भारतीय स्थापत्य का उद्‌भव व विकास–

(अ). आगम : देवालय एवं देवप्रतिमा।
(ब). साहित्यिक सन्दर्भ।
(स) पुरातात्विक सन्दर्भ।

अंक–16

इकाई–2 : आरम्भिक स्थापत्य–

(अ). वैदिक साहित्य विशेषरूप से श्रौत सूत्रों (श्रौत एवं शुल्ब) में वर्णित सन्दर्भ।
(ब). वास्तुपुरुष की अवधारणा उसका शैलीगत आवर्तन।
(स). पुरातात्विक संरचनाओं के आधार पर सिन्धु सभ्यता के स्थापत्य का अध्ययन।
(द). स्तूप और गुहा वास्तु (पूर्वी व पश्चिमी भारतीय) का उद्‌भव व विकास।
(इ) मौर्य प्रासाद।

अंक–16

इकाई–3 : मन्दिर स्थापत्य का उद्‌भव, विकास एवं उनका शास्त्रीय स्वरूप–

(अ) मन्दिर स्थापत्य की मुख्य शैलियाँ : नागर, वेसर एवं द्राविड़।
(ब) गुप्तकालीन मन्दिर : विकास और विशेषताएँ।

इकाई–4 : अंक–16

(अ) उत्तर भारत के मन्दिर (ओसियाँ (राजस्थान), खजुराहो, कश्मीर, भुवनेश्वर, कोणार्क और मोढेरा के सन्दर्भ में)।

(ब) दक्षिण भारत के मन्दिर (ऐहोल, एलोरा, महाबलीपुरम, कांचीपुरम, तंजौर, मदुरै के संदर्भ में)।

इकाई–5 : शाला, दुर्गविधान तथा नगरयोजना अंक–16

(अ) रंगशाला।

(ब) सभा।

(स) दुर्गविधान।

(द) सामाजिक निर्मिति (आवास, धर्मशालाएँ, आश्रम एवं विद्यास्थान)।

इकाई–6 आन्तरिकमूल्याङ्कन अंक–20

संस्तुत पाठ्यसामग्री–

1. अथर्ववेद, श्रीपाद दामोदर सातवलेकर, स्वाध्याय मण्डल, पारडी, जिला बालसड, प्रथम संस्करण, 1968।
2. महाभारत, गीताप्रेस संस्करण, 2017।
3. विष्णुधर्मोत्तरपुराण (तृतीय खण्ड), गीता प्रेस संस्करण, सवत् 2076।
4. अग्निपुराण, गीताप्रेस संस्करण, 2016।
5. मत्स्यपुराण, गीताप्रेस संस्करण, 2016।
6. अर्थशास्त्र, श्रीयुत प्राणनाथ विद्यालंकार, प्र. मोतीलाल बनारसीदास, चौक, वाराणसी, 1990।
7. समराङ्गणसूत्रधार, टी गणपतिशास्त्री, गायकवाडसंस्कृतग्रन्थमाला, क्रमांक–25, केन्द्रीयपुस्तकालय, वडोदरा, 1929.
8. वास्तुविद्या, सम्पादक एवं अनुवादक डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू', चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी, 2016।
9. प्रमाणमञ्जरी, सर्वदेव, सं. प्रियबाला शाह, ओरियण्टल सीरिज, बडौदा, गुजरात, 1958।
10. मानसोल्लास (भाग 1–3), सोमेश्वर द्वितीय, सम्पादक डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू', चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी, 2019।
11. भारतीय संस्कृति की रूपरेखा, पृथ्वी कुमार अग्रवाल, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, तृतीय संस्करण, 2020।
12. भारतीय कला, वासुदेवशरण अग्रवाल, पृथ्वी प्रकाशन, लंका, वाराणसी, 1966।
13. भारतीय वास्तुकला का इतिहास, कृष्ण दत्त वाजपेयी, उत्तरप्रदेशहिन्दीसंस्थान, लखनऊ, चतुर्थ संस्करण, 2015.
14. भारतीय संस्कृति के आधार, श्री अरविन्द, अनु0 जगन्नाथ वेदालंकार एवं चन्द्रदीप त्रिपाठी, श्री अरविन्द आश्रम, पांडिचेरी, तृतीय संस्करण, 2017।
15. भारत की चित्रकला, रायकृष्ण दास, भारती भण्डार, इलाहाबाद, 1936।
16. भारतीय मूर्तिकला, रमानाथ मिश्र, दिल्ली, 1978।
17. भारतीय मूर्तिकला, रायकृष्ण दास, काशी, संवत् 1978।
18. मध्यकालीन भारतीय मूर्तिकला, मारुतिनन्दन प्रसाद तिवारी और कमल गिरि, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, द्वितीय संस्करण, 2020।
19. *Vāstu-śāstra Hindu Science of Architecture*, Shukla D. N., Muraliram Manoharlal Publishers, New Delhi, 1993.
20. *Bharata, the Nāṭyaśāstra* (Six and Seventh Chapter), M. M. Gosh, Asiatic Society, Kolkata, 1950.
21. *Gupta Temple Architecture*, Agrawal, P.K., Prithavi Prakashan, Varanasi, 1968
22. *South Indian Paintings*, C. Sivaramamurti, National Musuem, New Delhi, 1968.
23. *Transformation of Nature in Art*, Coomaraswamy, Ananda K., Combridge Mass, 1934.
24. *Introduction to Indian Art*, Coomaraswamy, Ananda K. N. Delhi: Munshiram Manoharlal Pub., 1996.
25. *The Dance of Śiva*, Coomaraswamy, Ananda K., Rupa Publications, Pvt. Ltd., Reprint, 2014.
26. *Symbolism of Indian Architecture*, Coomaraswamy, Ananda K., Historical Research Documentation Programme, Jaipur, 1983.
27. *The Dharma- Chakra- Pravartana in Literature* and *Art*, Deena Bandhu Pandey, New Delhi, 1973.
28. *Silpa in Indian Tradition*, Mishra, R.N., Aryan Books International, New Delhi, 2009.
29. *Temples of India*, Vols. 1 -2, Deva, Krishna, Archaeological Survey of India, New Delhi, 1995.
30. *The Hindu Temple*, Vols. 1-2, Kramrisch, Stella, Motilal Banarsidass, Delhi, 1976.
31. *The Art of India through the ages*, Kramrisch, S., Phaidon Press, London, 1954.
32. *The Art of Ancient India*, Huntington, S.L., Weather hill Publication, New York, 1985.
33. *Mathurā Sculptures*, Joshi, N.P., Sandeep Prakashan, New Delhi, 2004.
34. *Indian Architecture (Buddhist and Hindu Period)*, Brown, P., Taraporevala Sons and Company, Bombay, 1976.
35. *Architecturer Mänsära*, Acharya P.K., Oxford University Press, London, 1934.
36. *Indian Art*, Agrawala, V.S., Prithvi Prakashan, Lanka, Varanasi, 1965.

COURSE XIV: PRACTICES IIIC : पाणिनीय एवं पाश्चात्य भाषाविज्ञान

(वैकल्पिक)
पूर्णांक : 100 (80+20)

अंक 16

इकाई–1 : पूर्व–पाणिनीय भाषाविज्ञान–

पूर्व–पाणिनीय भाषाविज्ञान का परिचय, पूर्व–पाणिनीय व्याकरण : ऐन्द्र सम्प्रदाय (कातन्त्र व्याकरण) तथा शैव सम्प्रदाय (पाणिनीय व्याकरण), अष्ट व्याकरण : ब्रह्म, चान्द्र, याम्य, रौद्र, वाचव्य, वारुण, सौम्य, वैष्णव।

अंक–16

इकाई–2 : पाणिनीय भाषाविज्ञान–

नव व्याकरण: ऐन्द्रं, चान्द्रं, कात्स्यकृत्स्नं, कौमारं, शाकटायनं, सारस्वतं, आपिशलि, शाकल्यं, पाणिनीयम्। पाणिनीय शिक्षा : वाक्–ध्वनि तथा छन्द : शास्त्रीय विशेषताएँ, अष्टाध्यायी का परिचय, माहेश्वरसूत्र की संरचना, शब्द क्या है? शब्दों का निर्माण, प्रातिपदिक की अवधारणा, सुबन्तं (Nominal Suffixes), तिङन्तं (Verbal Suffixes), अजन्त एवं हलन्त शब्दों का निर्माण, सन्धि (Morphophonemics/Morpho-Phonology), पाणिनि की अधिभाषा के नियम एवं प्रकार।

अंक–16

इकाई–3 : वृत्ति एवं शाब्दबोध की अवधारणा–

वृत्ति की अवधारणा : समास (Compounding) वृत्ति, कृदन्त वृत्ति (Verbal Nouns) तथा तद्धित वृत्ति (Derivations), सनाद्यन्त धातु वृत्ति, वाक्य : कारक एवं विभक्ति, भारतीय व्याकरणीय परम्परा में शाब्दबोध सिद्धान्त: आकांक्षा (Establishing relations), सन्निधि (Planarity Constraint) एवं योग्यता (Semantic restrictions)।

अंक–16

इकाई–4 : पाश्चात्य भाषाविज्ञान–

पाश्चात्य भाषाविज्ञान परम्परा : ब्लूमफील्ड, हॉकेट, ससुर, चॉम्स्की का परिप्रेक्ष्य, भाषाविज्ञान, भाषा का वर्णन, आधुनिक भाषाविज्ञान, पाणिनीय व्याकरण तथा सृजनात्मक व्याकरण, पाश्चात्य जगत में पाणिनि का प्रभाव।

अंक–16

इकाई–5 : पाणिनीय भाषाविज्ञान के अनुप्रयोग–

संस्कृत संगणनात्मक भाषाविज्ञान का परिचय, Digital Lexical Resources: पद जनक (Word Generators), पदविश्लेषक (Word Analysers), सन्धिविच्छेदक (Sandhi Splitter), नामवाचक, क्रियापद, कृत, तद्धित जनक, समास जनक, अमरकोष का ज्ञान–अंतरजाल (Amarakosha), संस्कनेट (Sansknet), अन्विति (Concordances), संस्कृत वाक्य विश्लेषण (Sanskrit Parsing).

अंक–20

इकाई–6 आन्तरिकमूल्याङ्कन

संस्तुत पाठ्यसामग्री–

1. Allen, W. S. 1953. *Phonetics in Ancient India*. London: OUP.
2. Bharati, A. et al. 1995. *Natural Language Processing: A Paninian Perspective*. New Delhi: Prentice-Hall of India.
3. Belwalkar, S. K. 1975. *Systems of Sanskrit Grammars*. New Delhi: Bharatiya Vidya. Prakashan.
4. Bhattojidikshitia, 1969. *Vaiykaranasiddhantakaumudi*, Part – I and Part – II., Varanasi: Chowkamba Sanskrit Series Office.
5. Cardona, G. 1997. *Pāṇini: A Survey of Research*. Varanasi: Motilal Banarsidass Publication.
6. Ghosh, Manmohan. 1938. *Paniniya Shiksha*. Calcutta: University of Calcutta.
7. Jha, Vashishtha Narayan. 1992. *Pre- Pāṇinian Grammatical Traditions (Part-I). A Linguistic Analysis of the Rgveda Padapāṭha*. India: Sri Satguru Publications.
8. Kulkarni, A., 2019. *Sanskrit Parsing: Based on the Theories of Śābdabodha*. Indian Institute of Advanced Study, Shimla.
9. Kiparsky, P. and Staal, J.F., 1969. *Syntactic and semantic relations in Pāṇini. Foundations of Language*, pp.83-117.
10. Namboodiri, E.V.N. 2016. *Origin and Development of Modern Linguistics*. New Delhi: Crescent Publishing Corporation.
11. Rath, Gayathri. 2000. *Linguistic Philosophy in Vakyapdiya*. Varanasi: Bharatiya Vidya Prakashan.
12. Staal, J.F., 1972. *A Reader on the Sanskrit Grammarians*. London: Cambridge.
13. Subrahmanyam, P.S., 1997. *Pāṇini and Modern Linguistics*, Journal of the Inst. of Asian Studies, 15.
14. Subrahmanyam, P.S. 1999. *Pāṇinian Linguistics. Institute for the Study of Languages and Cultures of Asia and Africa*, Tokyo: Tokyo University of Foreign Studies.
15. Shastri, Ramnath Tripathy. (Ed.) 2014. *Sanskrit Vyakarana Sastra ka Itihasa*. (History of Sanskrit Grammar). Delhi: Chaukhambha Orientalia.

****

COURSE XV – DISCIPLINE IIIA : साहित्यसिद्धान्त

(वैकल्पिक)
पूर्णांक : 100 (80+20)

इकाई–1 अंक–16

1. वाङ्मय, साहित्य, काव्य तथा शास्त्र–परिभाषाएँ।
2. भारतीय काव्य परम्परा– वैदिक तथा लौकिक।
3. क्षेत्रीय भाषाओं में रचित काव्य।

इकाई–2 अंक–16

1. साहित्य व काव्यरचना के प्रयोजन भारतीय दृष्टि।
2. साहित्य व काव्यरचना के आधार।
3. शब्दवृत्तियाँ।
4. अर्थनिर्धारण की पद्धतियाँ : ध्वनिसिद्धान्त के परिप्रेक्ष्य में।

इकाई–3 अंक–16

1. साहित्यसमीक्षा के सिद्धान्त–
   (क) रस, अलंकार, रीति (गुण)
   (ख) ध्वनि, वक्रोक्ति, औचित्य
2. सामाजिक का स्वरूप।
3. रस तथा भाव की अवधारणा।

इकाई–4 अंक–16

1. साहित्यशास्त्र के अर्वाचीन सिद्धान्त– अलं ब्रह्मवाद, चमत्कारवाद, आस्वादवाद।

इकाई–5 अंक–16

1. पाश्चात्य साहित्य समीक्षा सिद्धान्त का सर्वेक्षण।

इकाई–6 आन्तरिकमूल्याङ्कन अंक–20

संस्तुत पाठ्यसामग्री–

1. नाट्यशास्त्र, भरतमुनि, अनुवादक – पारसनाथ द्विवेदी, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी, 1996।
2. काव्यादर्श, दण्डी, व्या. शिवनारायण शास्त्री, परिमल प्रकाशन, दिल्ली, 2009।
3. काव्यलक्षण, दण्डी, मिथिला संस्कृत स्नातकोत्तर अध्ययन एवं शोध संस्थान, दरभंगा।
4. काव्यालंकार, भामह, व्या. रामानन्द शर्मा, चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, चौक, वाराणसी, 2013।
5. साहित्यदर्पण, विश्वनाथ, व्या. शिवप्रसाद द्विवेदी, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, 2013।
6. काव्यालंकारसूत्रवृत्ति (साहित्यशास्त्रसमुच्चय भाग–1) , वामन, सं. रेवाप्रसादद्विवेदी, सदाशिवकुमारद्विवेदी, प्र. कालिदाससंस्थान, 28 महामनापुरी वाराणसी 221005।
7. ध्वन्यालोक, आनन्दवर्धन, अनु. जगन्नाथ पाठक, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 2011।
8. औचित्यविचारचर्चा, क्षेमेन्द्र, अनु. ब्रजमोहन झा, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 1982।
9. वक्रोक्तिजीवित, कुन्तक, अनु. राधेश्याम मिश्र, चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी, वि.सं. 2055।
10. काव्यप्रकाश, मम्मट, नागेश्वरी टीका सहित, सं. श्रीहरिशंकर शर्मा, चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी, वि.सं. 2060।
11. दशरूपक (सावलोक), धनंजय–धनिक, भोलाशंकर व्यास, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 2019।
12. साहित्यशास्त्रसमुच्चय भाग 1से 7, सं. रेवाप्रसादद्विवेदी, सदाशिवकुमारद्विवेदी, प्र. कालिदाससंस्थान, 28 महामनापुरी वाराणसी 221005।
13. संस्कृत काव्यशास्त्र का आलोचनात्मक इतिहास, रेवाप्रसाद द्विवेदी, प्र. कालिदाससंस्थान, 28 महामनापुरी वाराणसी 221005, 2006।
14. अलं ब्रह्म, रेवाप्रसाद द्विवेदी, प्र. कालिदाससंस्थान, 28 महामनापुरी, वाराणसी 221005, 2005।
15. काव्यालंकारकारिका (हिन्दी अंग्रेजी अनुवाद तथा टिप्पणी सहित), रेवाप्रसाद द्विवेदी, प्र. कालिदाससंस्थान, 28 महामनापुरी वाराणसी 221005, 2014।
16. पाश्चात्य काव्यशास्त्र, देवेन्द्रनाथ शर्मा, मयूर पेपरबैक्स, ए 95, सेक्टर 5, नोएडा 201301, 2002, वितरक विश्वविद्यालय प्रकाशन, विशालाक्षी भवन, चौक, वाराणसी –221001।
17. Jagnnātha Paṇḍitarāja: *Rasagangādhara* with the commentary of Nagoji Bhaṭṭa, Nirnayasagar Press, Bombay, 1974.
18. Kane, P.V.: *History of Sanskrit Poetics*, Motilal Banarsidass, Delhi, 1971.
19. Ed. Pt. Reva Prasada Dwivedi: Mahimabhaṭṭa, *Vyaktiviveka*, with a Sanskrit commentary of Rājanaka Ruyyaka and Hindi commentary and notes, Chowkhamba Sanskrit Series Office, Varanasi-1, 1974.
20. Raghavan V: *Sanskrit Drama in Performance*, Ed. Rachel M. Baumen and James R. Brandon, Hawaii,

23. Sharma, Mukund Madhav: *The Dhvani Theory in Sanskrit Poetics*, Chowkhamba Sanskrit Series Office, Varanasi 1, 1968.
24. An Exposition of Vyakti Vivek, Triloknath Jha, Mithila Research Institute, Darbhanga.
25. An Exposition of the Chitra Mimansa, Mangal Pati Jha, Mithila Research Institute, Darbhanga.

****

COURSE XV – DISCIPLINE IIIB : भारतीय सैन्यविज्ञान व रणनीति

(वैकल्पिक)

पूर्णांक : 100 (80+20)

इकाई–1 : सैन्यविद्या और रणनीति– अंक–16

1. शत्रु का अर्थ, पर्याय, लक्षण, भेद, शत्रु का कारण, शत्रु शमन, शत्रु शमन के साधन।
2. मित्र का अर्थ, पर्याय, लक्षण भेद, मित्र का कारण, मित्र सम्वर्धन, मित्र सम्वर्धन के साधन।
3. सैन्य विद्या का अर्थ पर्याय, स्वरूप विमर्श उद्भव व विकास।
4. रणनीति का अर्थ पर्याय, स्वरूप विमर्श, उद्भव व विकास।

इकाई–2 : सेना का स्वरूप व युद्धनीति– अंक–16

1. सेना का अर्थ, लक्षण, सेना अंग, नारी सेना, सैनिक और अधिकारी सेना के भेद, स्कन्धावार व दुर्ग निर्माण।

इकाई–3 : अंक–16

1. युद्ध का अर्थ, पर्याय, लक्षण, भेद, युद्धभूमि विमर्श, युद्धयात्रा काल व स्थान विमर्श युद्धभूमि सैन्य निवेश संख्या व ससाधन परिमाण विमर्श, युद्ध में भोजन सामग्री, युद्ध कर्म का प्रारम्भ, युद्ध में सैन्य व राष्ट्र का सकारात्मक सहयोग, युद्ध में जय व पराजय, के उपरान्त आवश्यक कार्य (शान्ति / दमन)।

इकाई–4 : उपाय व षाड्गुण्य का सैन्यविद्या व रणनीति में भूमिका– अंक–16

1. उपाय का अर्थ, संख्या, स्वरूप व अनुप्रयोग विधि।
2. षाड्गुण्य का अर्थ, संख्या, स्वरूप, अनुप्रयोग विधि।

इकाई–5 : सैन्यविद्या व रणनीति का ज्ञानमीमांसीय पक्ष– अंक–16

1. ज्ञानमीमांसा का अर्थ, भेद, प्रक्रिया, ज्ञेयादि विमर्श।
2. स्पश व दूतों के द्वारा ज्ञातव्य तथ्य।
3. युद्ध मन्त्रणा व कार्यविनिश्चय।

इकाई–6 आन्तरिकमूल्याङ्कन अंक–20

संस्तुत पाठ्यसामग्री–

1. भारतीय युद्ध कला का क्रमिक विकास, अवधेश प्रताप शुक्ल आदि, नीलकमल प्रकाशन, गोरखपुर, 2003।
2. भारतीय सैन्यविज्ञान का इतिहास, पी. यादव व आर.एन. सिंह, नीलकमल प्रकाशन, गोरखपुर।
3. वेदों में राजनीतिशास्त्र, कपिलदेवद्विवेदी एवं भारतेन्दुद्विवेदी विश्वभारती अनुसन्धान परिषद, ज्ञानपुर(भदोही), 2013।
4. वैशम्पायननीतिप्रकाशिका, वैशम्पायन, सं. टी. चन्द्रशेखरन, गवर्नमेन्ट प्रेस, मद्रास, 1953।
5. कौटिलीयम् अर्थशास्त्रम्, व्याख्याकार : वाचस्पति गैरोला, चौखम्भा विद्याभवन, वाराणसी, 1984।
6. भारत का सैन्य इतिहास, एल.के. मिश्र, आकृति प्रकाशन, दिल्ली, 2019।
7. राजनीतिरत्नाकरः, चण्डेश्वर, काशी प्रसाद जायसवाल, लॉ जर्नल मुद्रणालय, इलाहाबाद, 1993।
8. कामन्दकीयनीतिसारः, गंगाधर बाबूराव काले, आनन्दआश्रममुद्रणालय, करल, 1964।
9. हिन्दू राजतन्त्र, के.पी.जायसवाल, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2012।
10. महाभारत की सांग्रामिकता, नन्दकिशोर, हंसा प्रकाशन, जयपुर।
11. सनातनधर्मोद्धारः (भाषा–भाव–प्रभाटीकासमेतः) (खण्ड 4), उमापति द्विवेदी, प्रेरक महामना मदन मोहन मालवीय, प्रकाशक, श्रीरामकृष्णदास, बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी प्रेस, वाराणसी, संवत् 1999।
12. *Vasistha's Dhanurveda Samhita*, translated into English by Purnima Ray, J.P.Publishing House, Delhi, 2003.
13. *Indian Art of War*, Major Alfred David, Atma Ram and Sons, Kashmiri gate, Delhi-6, 1953.
14. *Indian Military its History and Development*, S.T. Das, Sagar Publications, New Delhi, 1969.
15. *Cambridge History of India*, edited by S.W. Haig, Franklin Classic, 2018.
16. *Famous Battles in Indian History*, T.G. Subrahmanyam, Palit & Dutt Publishers, Dehrad

****

COURSE XVI – DISCIPLINE IVA : भारतीय कला

(वैकल्पिक)
पूर्णांक : 100 (80+20)

इकाई–1 अंक–16

1. भारतीय चिन्तन में कला की प्रतिष्ठा।
2. कला आध्यात्मिक, आधिदैविक एवं आधिभौतिक रूपों में।
3. सौन्दर्य की भारतीय अवधारणा।
4. सौन्दर्य के प्रतिमान एवं सौन्दर्यानुभूति।

इकाई–2 : नाट्यशास्त्र का दर्शन एवं बुद्धिवैचक्षण्य कलाएँ एवं गायन, वादन और नर्तन कलाएँ– संगीतरत्नाकर (शारंगदेव) के सन्दर्भ में एवं क्रीडाकौतुक। अंक–16

इकाई–3 : औपनिषदिक कलाएँ, आलेख्य एवं चित्रकला। अंक–16

इकाई–4 अंक–16

1. स्थापत्य एवं मूर्तिकला की मौलिक अवधारणायें तथा उनका शास्त्रीय विश्लेषण।

इकाई–5 अंक–16

1. हिन्दू प्रतिमा विज्ञान।
2. कला का आगमिक स्वरूप।

इकाई–6 आन्तरिकमूल्याङ्कन अंक–20

संस्तुत पाठ्यसामग्री–

1. यजुर्वेद, श्रीपाद दामोदर सातवलेकर, स्वाध्याय मण्डल, पार्डी जिला बालसड़, प्रथम संस्करण, 1968।
2. अथर्ववेद, श्रीपाद दामोदर सातवलेकर, स्वाध्याय मण्डल, पार्डी जिला बालसड़, प्रथम संस्करण, 1968।
3. जयमङ्गला व्याख्या श्री यशोधर विरचित (विद्या समुदेश्य प्रकरण) (तृतीय अध्याय), व्याख्याकार– श्री देवदत्त शास्त्री, प्रकाशक– चौखम्भा संस्कृत संस्थान, वाराणसी, संवत् 2039, सन् 2017।
4. महाभारत, गीता प्रेस संस्करण, संवत् 2016।
5. प्राचीन भारत के कलात्मक विनोद: हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, तृतीय संस्करण, 1963।
6. मध्यकालीन बोधस्वरूप (इं–बुक) हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, प्रयागराज, 2019।
7. क्षेमेन्द्र और उनका समाज: उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, 1984
8. तान्त्रिक साहित्य, गोपीनाथ कविराज, राजर्षि पुरुषोत्तमदास टंडन, हिन्दीभवन महात्मागाँधीमार्ग, लखनऊ, 1992।
9. भारतीय संस्कृति की रूपरेखा, पृथ्वी कुमार अग्रवाल, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, तृतीय संस्करण, 2020।
10. भारतीय कला, वासुदेवशरण अग्रवाल, पृथ्वी प्रकाशन, लंका, वाराणसी, 1966।
11. भारतीय वास्तुकला का इतिहास, कृष्ण दत्त वाजपेयी, उत्तरप्रदेश,हिन्दी संस्थान, लखनऊ, चतुर्थ संस्करण, 2015।
12. भारतीय संस्कृति के आधार, श्री अरविन्द, अनु० जगन्नाथ वेदालंकार एवं चन्द्रदीप त्रिपाठी, श्री अरविन्द आश्रम, पांडिचेरी, तृतीय संस्करण, 2017।
13. भारत की चित्रकला, रायकृष्ण दास, भारती भण्डार, इलाहाबाद, 1936।
14. भारतीय मूर्तिकला, रमानाथ मिश्र, दिल्ली, 1978।
15. मध्यकालीन भारतीय मूर्तिकला, मारुतिनन्दन प्रसाद तिवारी और कमल गिरि, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, द्वितीय संस्करण, 2020।
16. Bharata, the Nāṭyaśāstra (VI and VII Chapter), Translation: M.M. Gosh, Asiatic Society, Kolkata, 1950.
17. *Vastu-shatra Hindu Science of Architecture,* Shukla D. N., Muraliram Manoharlal Publishers, New Delhi, 1993.
18. *The Dharma Chakra Pravartan in Literature and Art*, Deena Bandhu Pandey, New Delhi, 1973.
19. *Painting of India*, Barrett, D. & B Gray, Lausanne: Skira, 1963.
20. *The Jaina Iconography*, Bhattacharya, B.C. Delhi: Motilal Banarsidass, 1974.
21. *ShilpaPrakasha*, Boner, Alice and SadashivaRath Sharma. New Delhi: Indira Gandhi National Centre for the Arts and MotilalBanarsidass Publishers, 2005.
22. *Symbolism of Indian Architecture*, Coomaraswamy, Ananda K., Jaipur: Historical Research Documentation Programme, 1983.
23. *Transformation of Nature in Art*, Coomaraswamy, Ananda K., Combridge Mass, 1934.
24. *Introduction to Indian Art*, Coomaraswamy, Ananda K. New Delhi: Munshiram Manoharlal Publishers, 1996.
25. *Temples of India*, Vols. 1 -2, Deva, Krishna, New Delhi: Archaeological Survey of India, 1995.
26. *Silpa in Indian Tradition*, Mishra, R.N., New Delhi: Aryan Books International, 2009.
27. *Facets of South Indian Art and Architecture*, Nagaswamy, R., New Delhi: Aryan Books International,

30. *Indian Painting*, Barrett, D. & B Gray. Geneva: d'art Albert Skira, 1978.
31. *Pahari Miniature Painting*, Khandalawala, K., Bombay: The New Book Company, 1958.
32. *Basohli Painting*, Randhawa, M.S., New Delhi: Publications Divisions, Govt. of India, 1959.
33. Sadanga or Six Limbs of Painting, Tagore, A., Indian Society of Oriental Art, Calcutta, 1968.
34. Kalā-tattva-kaśa, volume I – VII, IGNCA, New Delhi.
35. Elements of Hindu Iconography, T. A. Gopinath Rao, Law Printing House, Manto Road, Madras, 1916.
36. The Development of Hindu Icongraphy, Jitendra Nath Banejea, University of Calcutta, 1941.

****

COURSE XVI- DISCIPLINE IVB: विधि तथा न्यायशास्त्र

(वैकल्पिक)
पूर्णांक : 100 (80+20)

इकाई–1 : विधिविज्ञान का उत्स और अवधारणा– अंक–16

1. स्रोत– श्रुति, धर्मसूत्र, स्मृति, अर्थशास्त्र, नीतिशास्त्र, पूर्वमीमांसा, परिषादी, आत्मसंतुष्टि, भाष्य, संकलन और न्यायालय के वादनिर्णय।
2. अवधारणा– वैदिकधर्म, स्मार्तधर्म, राजधर्म, व्यवहारधर्म। अष्टादश व्यवहारपद।

इकाई–2 : व्यवहारमातृका– अंक–16

1. चतुष्पादव्यवहार भाषा, उत्तर–सत्य, मिथ्या, कारण, प्राङ्न्याय, क्रिया–आगम, भोग, साक्षी, दिव्य निर्णय–साध्यसिद्धि।

इकाई–3 : विधिशास्त्र के तत्त्व– अंक–16

अ) स्वत्व, स्वामित्व।
ब) सम्प्रदाय : मिताक्षरा और दायभाग– वाराणसी, बम्बई, बंगाल और दक्षिण भारतीय सम्प्रदाय।

इकाई–4 : अंक–16

अ) विवाहविधि, दत्तकविधि, उत्तराधिकारविधि, देवोत्तरविधि

इकाई–5 : विधिशास्त्र का इतिहास और मीमांसा– अंक–16

अ) विधिशास्त्र का इतिहास।
ब) विधि (कानून) की मीमांसा।

इकाई–6 आन्तरिकमूल्याङ्कन अंक–20

संस्तुत पाठ्यसामग्री–

1. मीमांसान्यायप्रकाश (छायाज्ञानवतीहिन्दीव्याख्यासहित), आपदेव, राधेश्याम चतुर्वेदी, चौखम्बा संस्कृत सीरीज, वाराणसी, 2016।
2. राम निवास तिवारी, हिन्दू विधि विवेक:, वाराणसी : पिलग्रीम पब्लिशिंग।
3. पी.वी. काणे, धर्मशास्त्र का इतिहास, अनु. अर्जुन चौबे काश्यप, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, 1994।
4. धर्मशास्त्रीयनिबन्धावली, म. म. महेश ठाकुर, एस. भट्टाचार्य, मिथिला संस्कृत स्नातकोत्तर अध्ययन एवं शोध संस्थान, दरभंगा।
5. दत्तकमीमांसा, प्रकाशन विभाग काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी।
6. P.V. Kane, *History of Dharmasastra*, Vol-1& 3, Poona: BORI, 2017.
7. G.N. Jha, *Hindu Law in its Sources*, Varanasi: Sampoornanand Sanskrit University, 2017.
8. K.L.Sarkar, *Principles of Mīmāṁsā Rules of Interpretation*, Ed. Markandeya Katzu, 1993.
9. P.N. Sen, *Hindu Jurisprudence*, Kolkata: Calcutta University, 2020.
10. P.V.Kane: *Vyavahāra Mayukh of Nilakantha*, Poona: BORI, Rashtriya Sanskrit Sansthan, 2009.
11. B.K.Swain, *The Voice of Verdict*, Varanasi: Chaukhamba Sanskrit Sansthan, 2013.
12. *Dharmasastra on Law & Ethics*, Delhi: Akshyaya Prakashan, 2019.
13. Shivaji Sing, *Evolution of Smṛti Law*, Varanasi, 2007.
14. Paras Diwan, *Modern Hindu Law*, Delhi, 2018.
15. D.F.Mulla, *Principles of Hindu Law*, Delhi, 2013.

****